मेरीखेती

नवंबर, 2024 । मूल्य : रु49

www.merikheti.com | YouTube

विषय सूची

सम्पादकीय

सलाहकार मंडल

खेत खलियान	01 - 07
बागवानी फसलें	08 - 11
मशीनरी	12 - 20
कृषि सलाह	21 - 24
पशुपालन–पशुचारा	25 - 29
औषधीय खेती	30

विज्ञापन के लिए संपर्क करें : 91-9899991906, 91-8800777501

सम्पादकीय

डिजिटलाइजेशन से आसान होती किसानी

डिजिटलाइजेशन जो पहले चरण में किसानों को झंझट लगता था अब किसानों की राह आसान कर रही है। इस दिशा में और सार्थक कदम उठाते हुए गत माह केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित 2,817 करोड़ रुपये के आवंटन के साथ डिजिटल कृषि मिशन को पुनर्जीवित करने का प्रस्ताव अहम है।

आधुनिक सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) की मदद से किसानों को सरकारी छूट सीधे उनके खाते में जाने लगी है। किसान अपनी जमीन का रिकार्ड कहीं भी बैठकर देख सकता है। मौसम पूर्वानुमान से लेकर फसल तकनीक सुझाव आसान हुए हैं। ग्लोबल वार्मिंग से जटिल होती कृषि क्रियाओं को डिजिटल दौर ने आसान बनाया है।
जमीनी विवादों में गिरावट से किसानों का समय, श्रम व पैसा तीनों बचेंगे। लागत में गिरावट और उत्पादन में इजाफा होगा। किसानों की समयबद्ध आवश्यकता के अनुसार सलाह व सुझाव का प्लेटफार्म सशक्त होगा। कृषि क्षेत्र की तरफ आकर्षित युवा डिजिटल तकनीक के सहारे खेती में नमी कहानियां गढ़ रहे हैं। युवा सेल. फोन पर मौसम पूर्वानुमान की जानकारी किसानों में अब ज्योतिषियों की तरह साझा करते हैं। बरसात होने वाली है। इसे ध्यान में रखकर खेती के काम करें।

आज शहरों से ज्यादा गांव में मोबाइल फोन उपयोगकर्ता हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक यह आंकड़ा 53 प्रतिशत है। ऐसे एप विकसित हो चुके हैं जो किसी फसल का फोटो खींचकर डालने से ही उचित सलाह व समाधान एक क्लिक पर मुहैया करा देते हैं। किसान उत्पादक संगठन, एफपीओ भी इस दिशा में किसानों के लिए अच्छा काम करने लगे हैं।

इस यकनीक की यात्रा ने एक दशक भी सरकारी मदद से पूरा नहीं किया है लेकिन ई नाम, ड्रोन स्प्रे, कीट रोग निगरानी व नियंत्रण, पराली जलाने की सेटेलाइट मानीटरिंग, पैदावार आकलन, बाजार सरलीकरण, जरूरत के अनुसार मैसेजिंग जैसे अनेक काम डिजिटल मिशन ने आसान किए हैं।

श्री दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

कृष्ण पाठक
फाउंडर, मेरीखेती

डॉ एम सी शर्मा
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति आईवीआरआई
इज्जतनगर

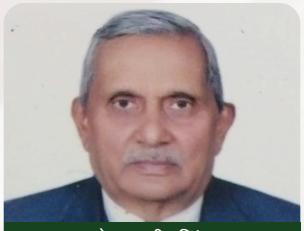

प्रो. ए पी सिंह
पूर्व कुलपति, वेटरनरी विश्व विद्यालय,
मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ हरि शंकर गौड़
पूर्व कुलपति एसबीबीपीयूएटी, मेरठ, साइंटिस्ट,
गलगोटिया विश्वविद्यालय

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त)
उत्तर प्रदेश

डॉ उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर,
राजस्थान

डॉ. अनिल कुमार सिंह
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा

डॉ एसके सिंह
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र प्रसाद
केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार

डॉ रितेश शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन
(एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)

डॉ सी बी सिंह
एक्स – सीनियर साइंटिस्ट, IARI, पूसा

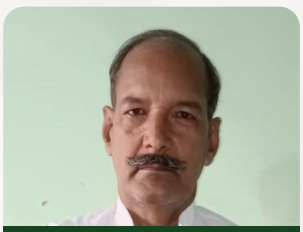

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

गेहूं की फसल से अधिक उपज प्राप्त करने के लिए आवश्यक बातें

भारत गेहूं उत्पादन में विश्व में दूसरे स्थान पर आता है। यहां गेहूं की खेती रबी फसल के रूप में की जाती है और सबसे अधिक हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और बिहार में होती है। उत्पादन के हिसाब से उत्तर प्रदेश पहले स्थान पर है, जबकि प्रति एकड़ उत्पादन के आधार पर पंजाब सबसे आगे है। गेहूं की खेती के लिए पर्याप्त सिंचाई की आवश्यकता होती है। एक सफल फसल के लिए कुछ महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना जरूरी है। आइए जानते हैं गेहूं की अच्छी उपज के लिए किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

फसल चक्र अपनाने से उपज में वृद्धि

फसल चक्र गेहूं की खेती में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसे अपनाने से उपज में बढ़ोतरी हो सकती है। फसल चक्र रोग प्रतिरोधी और खरपतवार नियंत्रण में भी सहायक होता है। अगर गेहूं की खेती वाले खेत में दलहनी फसलों की खेती की जाए, तो यह नाइट्रोजन स्थिरीकरण के माध्यम से मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाता है और फसल की पैदावार में सुधार होता है।

मृदा परीक्षण से पैदावार बढ़ाने में मदद

खाद और उर्वरक की सही मात्रा जानने के लिए मृदा परीक्षण बहुत जरूरी है। हर 3–4 साल में मिट्टी का परीक्षण कराना चाहिए ताकि मिट्टी का पीएच स्तर पता चल सके। इसके लिए खेत की ऊपरी मिट्टी से 10–20 और 20–30 से.मी. गहराई से नमूना लिया जाता है। खेत की मिट्टी का पीएच 5.5 या उससे अधिक बनाए रखने का प्रयास करें। अगर पीएच कम हो, तो मिट्टी में चूने का प्रयोग करें।

उन्नत किस्मों का चयन

उन्नत किस्में फसल उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये किस्में रोग प्रतिरोधी होती हैं और अधिक पैदावार देती हैं। चूंकि इन किस्मों में रोग नहीं लगते, इसलिए उत्पादन पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता, जिससे बेहतर उपज मिलती है।

खरपतवार नियंत्रण

खरपतवार नियंत्रण गेहूं की फसल में बहुत जरूरी होता है, क्योंकि यह उपज को काफी हद तक कम कर सकता है। खाद और उर्वरक का अधिकांश हिस्सा खरपतवार सोख लेते हैं, जिससे फसल की वृद्धि रुक जाती है। इसलिए अधिक पैदावार पाने के लिए समय पर खरपतवार नियंत्रण जरूरी है।

उन्नत गेहूं की किस्में: 90–97 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उत्पादन देने वाली किस्में

किसान भाइयों, जैसे कि आप जानते हैं कि खरीफ की धान की फसल की कटाई चल रही है, और इसके बाद गेहूं की बुवाई का समय आ रहा है। अधिक पैदावार पाने के लिए उन्नत किस्मों का चयन करना जरूरी है, ताकि आपको बेहतर मुनाफा मिल सके। उन्नत गेहूं की किस्में फसल की गुणवत्ता और उत्पादन में सुधार करती हैं। आइए जानते हैं कुछ ऐसी उन्नत किस्मों के बारे में जो प्रति हेक्टेयर 90 से 97 क्विंटल तक उत्पादन दे सकती हैं।

गेहूं की बंपर पैदावार देने वाली उन्नत किस्में

1. गेहूं की किस्म – करण वंदना (Karan Vandana)

करण वंदना, जिसे क्ठॅ 187 के नाम से भी जाना जाता है, आईसीएआर–भारतीय गेहूं और जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा विकसित की गई है। इस किस्म से प्रति हेक्टेयर लगभग 96.6 क्विंटल उत्पादन मिल सकता है। यह किस्म पीला रतुआ और ब्लास्ट जैसी बीमारियों के प्रति काफी प्रतिरोधी है। इसका उत्पादन पश्चिमी उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली और जम्मू के किसानों के लिए उपयुक्त है। करण वंदना की फसल 148 दिनों में तैयार हो जाती है और ब्रेड बनाने में इसका परिणाम बेहतर होता है।

2. गेहूं की किस्म – करण श्रिया (Karan Shriya)

करण श्रिया, जिसे क्ठॅ 252 के नाम से भी जाना जाता है, आईसीएआर–भारतीय गेहूं और जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा जून 2021 में लॉन्च की गई थी। यह किस्म एक सिंचाई पर ही अच्छी पैदावार देती है। इस किस्म से प्रति हेक्टेयर लगभग 55 क्विंटल उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। करण श्रिया 127 दिनों में तैयार हो जाती है और पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और उत्तर–पूर्व के तराई क्षेत्रों के किसानों के लिए बेहतर है।

3. गेहूं की किस्म – करण नरेंद्र (Karan Narendra)

करण नरेंद्र, जिसे क्ठॅ 222 भी कहा जाता है, आईसीएआ. र–भारतीय गेहूं और जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा विकसित की गई एक उन्नत किस्म है। यह किस्म प्रति हेक्टेयर लगभग 82.1 क्विंटल तक उत्पादन देती है और इसे रोटी, ब्रेड और बिस्किट बनाने के लिए उपयोगी माना जाता है। इसकी बुआई अगेती हो सकती है और यह किस्म 143 दिनों में तैयार हो जाती है। यह पश्चिमी उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली और

बीटी कपास क्या हैं? बीटी कपास उगाने के लाभ

कपास हमारे देश की सबसे महत्वपूर्ण व्यावसा. यिक फसल है, जो कपड़ा उद्योग की 75% तक कच्चे माल की जरूरतों को पूरा करती है और लगभग 60 मिलियन लोगों को रोजगार प्रदान करती है। भारत कपास की खेती में क्षेत्रफल के हिसाब से सबसे आगे है, लेकिन यहां की उत्प. ादकता अपेक्षाकृत कम है, जिसका मुख्य कारण इनपुट की अपर्याप्त आपूर्ति और वर्षा आधारित खेती के अंतर्गत बड़े क्षेत्र में इसकी खेती होना है। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत विश्व में पहले स्थान पर है, जबकि उत्पादन में चीन के बाद दूसरे स्थान पर आता है। भारत में गॉसिपियम की सभी चार स्पिनेबल फाइबर उत्पादक प्रजा. तियों दृ गॉसिपियम हिर्सुटम, जी. बारबाडेंस, जी. आर्बोरियम, और जी. हर्बेशियम की व्यावसायिक खेती होती है।

भारतीय कपास क्षेत्र में कुल कपास क्षेत्रफल का लगभग 45% हाइब्रिड कपास के अंतर्गत आता है, जो उत्पादन में 55% का योगदान देता है, जो भारतीय कपास उत्पादन के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। भारत में बीटी कपास की बुवाई अधिक की जाती है जो कि गॉसिपियम हिर्सुटम कपास ही है इसमें कुछ बदलाव करके इसको उन्नत बनाया गया है जिससे की बीटी कपास कई कीटों से बचाव करती है।

कपास में लगने वाले किट

कपास की फसल पर कई प्रकार के कीटों का प्रकोप होता है, जिससे इसकी पैदावार में काफी कमी आ जाती है। कपास पर हमला करने वाले कीटों को मुख्य रूप से रस चूसने वाले कीटों (जैसे एफिड्स, जैसिड्स, और सफेद मक्खी) और चबाने वाले कीटों (जैसे बॉलवर्म, पत्ती खाने वाले कैटरपिलर) में वर्गीकृत किया जा सकता है। भारतीय कृषि में इस्तेमाल होने वाले कुल कीटनाशकों में से लगभग 45% का छिड़काव कपास की फसल पर ही किया जाता है।

कपास में कीटनाशकों के उपयोग को कम करने के लिए आनुवंशिक प्रतिरोध, एकीकृत कीट प्रबंधन (IPM), और कीटनाशक प्रतिरोध प्रबंधन (IRM) जैसी कई रणनीतियों को अपनाने की सलाह दी जाती है। हाल के दिनों में, बीटी कपास तकनीक को कपास के प्रमुख कीट, बॉलवर्म के नियंत्रण के लिए सबसे प्रभावी रणनीतियों में से एक माना गया है।

बीटी कपास क्या हैं?

आनुवंशिक प्रतिरोध, महत्वपूर्ण कीट प्रबंधन रणनीति में से एक है, कपास जीन पूल में रस चूसने वाले कीटों जैसे जैसिड्स, व्हाइटफ्लाई आदि के खिलाफ उपलब्ध है। इसका उपयोग करके भारत में कई प्रतिरोधीध्सहनशील किस्मों और संकरों को विकसित और जारी किया गया है। हालाँकि, इस प्रकार का ज्ञात प्रतिरोध बॉलवर्म के विरुद्ध उपलब्ध नहीं है। इसलिए, मिट्टी के जीवाणु बैसिलस थुरिंगिएन्सिस से जहरीले क्रिस्टल δ – एंडो टॉक्सिन प्रोटीन को एन्कोडिंग करने वाले जीन को क्लोन और स्थानांतरित करके इस समस्या को हल करने के लिए एक वैकल्पिक रणनीति का पता लगाया गया है, जिसे बीटी कपास के नाम से जाना जाता है।

बीटी कपास, ट्रांसजेनिक कपास (मोन्सेंटो का बोल्गार्ड) को संयुक्त राज्य अमेरिका में सफलतापूर्वक विकसित किया गया है, जो फसल के विकास के प्रारंभिक चरण (90 दिनों तक) में बॉलवर्म को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने की क्षमता रखता है। बीटी कपास संकर किस्मों में, MECH-184 और MECH-12 ने गैर–बी. टी और जाँच संकरों की तुलना में बॉल और लोक्यूल को होने वाले नुकसान को काफी कम दर्ज किया, जो कि बॉलवर्म के नुकसान के प्रति उच्च सहनशीलता प्रदर्शित करता है।

बीटी कपास के लाभ

आकड़ो के मुताबिक बीटी कपास संकरों ने कुछ स्थानों पर केवल 90 दिनों के बाद एक बार ही बॉलवर्म की आबादी के लिए आर्थिक सीमा स्तर (ETL) को पार किया। जबकि गैर–बीटी किस्मों और जाँच संकरों ने 60 दिनों के बाद से विभिन्न स्थानों पर तीन से अधिक बार ETL को पार किया। बीटी कपास संकरों में विशेषकर हेलिकोवर्पा आर्मिजेरा (कपास की सुंडी) की संख्या गैर–बीटी और जाँच संकरों की तुलना में काफी कम थी, इससे बीटी कपास की उपज अधिक होती हैं।

बीटी कपास की बड़े पैमाने पर खेती के कारण कीटनाशक उपयोग में उल्लेखनीय कमी आई है, जो गैर–ट्रांसजेनिक किस्मों की तुलना में 40–60% तक कम है। दुनिया भर में बीटी कपास ने न केवल कीटनाशकों के उपयोग में कमी की है, बल्कि उपज में भी वृद्धि में योगदान दिया है। बीटी कपास गैर बीटी की तुलना में लगभग 20–30 दिन जल्दी तैयार हो जाता है। गैर बीटी का गैर–लक्षित जीवों और निकटवर्ती गैर बीटी कपास या अन्य फसलों पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं।

कुसुम की खेती: जानें उन्नत तरीके, उपज और लाभकारी फसल प्रबंधन

कुसुम की खेती पुराने समय से तेल की फसल के रूप में की जाती है। कुसुम की खेती भारत में बड़े पैमाने पर की जाती हैं। कुसुम के उत्पादन में भारत का प्रथम स्थान हैं, भारत में कुसुम की खेती महा. राष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात, आंध्र प्रदेश, उड़ीशा और बिहार में की जाती हैं। अगर कुसुम की फसल की अच्छे से देखभाल नहीं की जाती हैं तो इसका उत्पादन बहुत कम होता हैं। इसलिए आज के इस लेख में हम आपके लिए कुसुम की खेती से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी लेकर आये हैं जिससे आपको फसल प्रबंधन में आसानी होगी।

कुसुम की खेती

कुसुम का वैज्ञानिक नाम Carthamus tinctorius हैं और ये Asteraceae परिवार से तालुकात रखता हैं। कुसुम को मराठी में करड़ी, कन्नड़ में कुसुबे, हिंदी में कुसुम तेलुगु में कुसुमा और अंग्रेजी में Safflower के नाम से जाना जाता हैं। इसके फूल का इस्तेमाल तेल के उत्पादन के लिए ही किया जाता हैं। कुसुम में 30 से 40 प्रतिशत तक तेल की मात्रा पाई जाती है। कुसुम के तेल का इस्तेमाल खाना पकाने के लिए किया जाता है। तेल के निकलने के बाद प्राप्त होने वाली खल का इस्तेमाल पशुओं के आहार के रूप में किया जाता है।

कुसुम की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

कुसुम की फसल ठंडे मौसम यानी की रबी की फसल हैं। कुसुम की खेती समुद्र तल से 950 से 1000 मीटर तक की ऊंचाई तक की जाती हैं। इसकी खेती के लिए 22 डिग्री से 35 डिग्री तक का तापमान उत्तम माना जाता हैं। फसल की अच्छी उपज पाने के लिए तापमान का अहम् योगदान होता हैं।

कुसुम की खेती के लिए मिट्टी

कुसुम की खेती कई प्रकार की मिट्टी में की जा सकती हैं, परन्तु इसकी खेती के लिए बलुई दोमट, चिकनी दोमट और जलोढ़ मिट्टी सबसे अच्छी मानी जाती हैं। मिट्टी में उचित पानी निकासी की व्यवस्था होनी बहुत आवश्यक होती हैं मिट्टी में पानी खड़े रहने से फसल को नुकसान हो सकता हैं।

बुवाई के लिए खेत की तैयारी

रबी की खेती के दौरान काली मिट्टी के खेत में जहाँ एक ही फसल रबी के मौसम में उगाई जाती हैं वहाँ 3 से 4 जुताई करें ताकि मिट्टी भुरभुरी हो जाए और आसानी से बीज की बुवाई हो सकें।

कुसुम की उन्नत किस्में

कुसुम की अधिक उपज पाने के लिए उन्नत किस्मों का अहम् योगदान होता हैं, इसलिए बुवाई के लिए निम्नलिखित किस्मों का ही चुनाव करे:

- एनएआरआई–एनएच 1
- एनएआरआई– एच 15
- भीमा
- पीकेवी पिंक
- परभणी कुसुम
- फुले कुसुम

कुसुम बुवाई के लिए बीज की मात्रा और बीज उपचार

कुसुम की बुवाई के लिए 7.5 से 10 kg प्रति हेक्टेयर बीज की आवश्यकता होती हैं। बुवाई करते समय फसल में 45x20 cm का गैप होना चाहिए। बीज को एक पॉलिथीन बैग में 4 ग्राम / किलो बीज की दर से कार्बेन्डाजिम या थीरम से उपचारित करें और बीज पर कवकनाशी की एक समान कोटिंग सुनिश्चित करें। बुआई से 24 घंटे पहले बीज का उपचार करें।

फसल में खाद प्रबंधन

फसल की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए फसल में बुवाई करने से 2 से 3 सप्ताह पहले खेत में 5 टन प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर की खाद डालें। बुवाई के समय खेत में 30 किलोग्राम नाइट्रोजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस, और 25 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में डालें।

कुसुम की कटाई

फसल की औसत अवधि को ध्यान में रखते हुए फसल का निरीक्षण करें। फसल के पकने पर पत्तियाँ और पूरा पौधा अपना रंग खो देता है और परिपक्व होने पर भूरे रंग का हो जाता है। कटाई के बाद फसल को सूखने के लिए खेत में ही रखे और थ्रेशर की मदद से बीज को अलग करें। बीजों को एकत्रित करके बोरियों में भण्डारित करें।

ICAR-DRMR -सरसों अनुसंधान निदेशालय द्वारा विकसित सरसों की उन्नत किस्में

सरसों (Brassica juncea) एक महत्वपूर्ण तेल की फसल है, जिसका उपयोग खाद्य तेल, अचार, और विभिन्न खाद्य उत्पादों में किया जाता है। उन्नत किस्मों का विकास किसान की उत्पादन क्षमता बढ़ाने, रोगों से सुरक्षा प्रदान करने, और कृषि की विभिन्न चुनौतियों से निपटने के लिए किया गया है। इस लेख में हम भाकृअनुप–डीआरएमआर द्वारा विकसित सरसों की उन्नत किस्मों के बारे में जानकारी देंगे।

भाकृअनुप–डीआरएमआर (ICAR-Directorate of Rap eseed-Mustard Research) द्वारा विकसित सरसों की उन्नत किस्में

1. डीआरएमआर –राधिका (भारतीय सरसों)

सरसों की यह किस्म अच्छा उत्पादन देती है। राधिका किस्म को दिल्ली, हरियाणा, जम्मू और कश्मीर, पंजाब और राजस्थान के कुछ हिस्से में लगने के लिए तैयार किया गया है। मुख्य रूप से ये किस्म देर से बोई गई (सिंचित) स्थितियों के लिए विकसित की गयी है। इस किस्म के पौधे की ऊंचाई 191– 204 से.मी. तक होती है और इसकी औसत उत्पादकता 18 से 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हैं। राधिका सरसों में तेल की मात्रा 40.7% होती है। सरसों की इस किस्म में प्रति फली बीज की संख्या 14 बीज होती है। ये किस्म 120 – 150 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। इस किस्म के विशेष गुण अल्टरनेरिया ब्लाइट, व्हाइट रस्ट, स्टेम रोट, डाउनी मिल्ड्यू और पाउडरी मिल्ड्यू और एफिड का निम्न संक्रमण है।

2. डीआरएमआरआईसी 16–38, (बृजराज)

ये भी एक सरसों की उन्नत किस्म है, इस किस्म को दिल्ली, हरियाणा, जम्मू और कश्मीर, पंजाब और राजस्थान के लिए विकसित किया गया है। बृजराज किस्म सरसों के पौधे की ऊंचाई 188– 197 से.मी. तक होती है। इस किस्म में तेल की मात्रा: 37.6– 40.9% तक हो सकती है। बृजराज में प्रति फली बीज की संख्या 14–18 बीज हो सकती है। इस किस्म की फसल 120– 149 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। उत्पादन की क्षमता 16 से 18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। बृजराज किस्म में अल्टरनेरिया ब्लाइट, व्हाइट रस्ट, स्टेम रोट, डाउनी मिल्ड्यू और पाउडरी मिल्ड्यू और एफिड का संक्रमण बहुत कम देखने को मिलता है।

3. एनआरसीएचबी–101 (भारतीय सरसों)

इस किस्म का विकास मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान, बिहार, जम्मू और कश्मीर, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, असम, छत्तीसगढ़ और मणिपुर के लिए किया गया हैं। इस किस्म की उत्प. ादकता 15 से 16 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हैं साथ ही इसमें तेल की मात्रा 34.6– 42.1% हैं, जो की ऊपर दी गयी किस्मों की तुलना में अधिक हो सकती हैं। एनआरसीएचबी–101 सरसों की ऊंचाई 170– 200 से.मी. तक हो सकती हैं। ये किस्म देर से बोई गई सिंचित और बारानी स्थितियों के लिए उपयुक्त हैं। इस किस्म की फसल 105–135 दिन में पक कर तैयार हो जाती हैं और अच्छा उत्पादन देती हैं।

4. डीआरएमआर 1165–40 (भारतीय सरसों)

इस किस्म का सबसे बड़ा गुण ये हैं कि ये किस्म अंकुर अवस्था में गर्मी सहिष्णु और नमी तनाव सहिष्णु हैं जिससे की इस किस्म का उत्पादन सबसे अधिक होता हैं। इस किस्म को राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब और जम्मू और कश्मीर आदि राज्यों के लिए तैयार किया गया हैं। किस्म की औसत उत्पादकता 22–26 क्विंटलध्हेक्टेयर है और साथ ही इसके बीज में तेल की मात्रा 40–42.5% तक होती है। डीआरएमआर 1165–40 किस्म के पौधे की ऊंचाई 177–196 से.मी. तक होती है। फसल को पकने के लिए 133 – 151 दिनों की आवश्यकता होती हैं।

5. डीआरएमआरआईजे–31 (गिरिराज) (भारतीय सरसों)

इस किस्मों को सबसे अधिक उत्पादन देने वाली किस्म के नाम से जाना जाता हैं साथ ही इसमें तेल की मात्रा भी अधिक होती हैं। सरसों की ये किस्म 137–153 दिन में पक कर तैयार हो जाती हैं और प्रति हेक्टेयर औसत उत्पादकता 22–27 क्विंटल प्राप्त होता हैं। इस किस्म का विकास समय पर बोई गई सिंचित स्थिति के लिए किया गया हैं इस किस्म की बुवाई दिल्ली, हरियाणा, जम्मू और कश्मीर, पंजाब और राजस्थान के हिस्सों में की जा सकती हैं साथ ही इसके पौधे की ऊंचाई 180 – 210 से.मी. तक चली जाती हैं। फली में दानों की संख्या 14–18 बीज तक हो सकती हैं। इस किस्म को मोटे बीज वाली, अधिक तेल वाली और अधिक उपज देने वाली किस्म के नाम से जाना जाता हैं। उन्नत सरसों की किस्में किसानों को बेहतर उत्पादन, रोग प्रतिरोधक क्षमता, और कृषि की विभिन्न चुनौतियों से निपटने में मदद करती हैं। इन किस्मों को अपनाकर किसान अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं और स्थायी कृषि के लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं। उचित कृषि प्रथाओं के साथ इन उन्नत किस्मों का उपयोग करने से सरसों की खेती अधिक लाभकारी बन सकती है।

गुलमेंहदी क्या होती है? इसकी खेती, उपयोग और पैदावार के बारे में जानकारी

गुलमेंहदी एक जड़ी–बूटी का पौधा है, जिसको औषधीय और मसाले के रूप में इस्तेमाल करने के लिए उगाया जाता हैं। इसको अंग्रेजी में त्वेमउंतल भी कहा जाता हैं। हमारे देश में भी इसकी खेती कई स्थानों पर की जाती हैं। गुलमेंहदी का उपयोग मास, सुप और विभिन्न व्यंजनों में मसाले के रूप में किया जाता हैं। आज के इस लेख में हम आपको गुलमेंहदी से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

गुलमेंहदी क्या होती है?

गुलमेंहदी या त्वेमउंतल एक सुगन्धित जड़ी–बूटीक पौधा है, इसका वैज्ञानिक नाम Rosmarinus officinalis हैं, जो की पुदीने के परिवार से संबंधित है। इसका उपयोग कई चीजों में किया जाता हैं सबसे ज्यादा इसको सौंदर्य और त्वचा के लिए इस्तेमाल किया जाता हैं। इससे इत्र, साबुन, और अन्य सुगंधित उत्पाद भी बनाए जाते हैं।

गुलमेंहदी के उपयोग

गुलमेंहदी एक बहुत उपयोगी पौधा जिसको कई चीजों में इस्तेमाल किया जाता हैं जो की निम्नलिखित हैंरू

औषधीय गुण

इसकी सुगंध और स्वाद अद्भुत हैं, और यह स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा है। गुलमेंहदी को माउथ फ्रेशनर के रूप में, चिकित्सीय सहायता के लिए इसका उपयोग सिरदर्द, पेट के दर्द, और जोड़ों के दर्द के इलाज में किया जाता है। गुलमें. हदी में एंटीऑक्सीडेंट और सूजन–रोधी गुण होते हैं, जो की पाचन सुधारने, और तनाव कम करने में सहायक होते हैं।

खाद्य सामग्री

गुलमेंहदी आम तौर पर मांस, सूप और कई अन्य व्यंजनों में मसाला होता है। ताजा और सूखा दोनों इसका उपयोग होता है।

सौंदर्य और त्वचा के लिए

गुलमेंहदी का तेल भी निकलता हैं जो की बालों और त्वचा के लिए फायदेमंद माना जाता है। यह बालों के विकास को बढ़ाता है और त्वचा को चमकदार बनाता है। इसके साथ ही इसका उपयोग इत्र, साबुन, और अन्य सुगंधित उत्पादों को बनने के लिए भी किया जाता हैं।

गुलमेंहदी की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

गुलमेंहदी की खेती के लिए 30 डिग्री सेल्सियस से नीचे ठंडी सर्दी और हल्की गर्मी की आवश्यकता होती है। समशीतोष्ण जलवायु क्षेत्र गुलमेंहदी की खेती के लिए उपयुक्त हैं। गुलमें. हदी खेती के लिए हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू कश्मीर जैसे पहाड़ी राज्यों का वातावरण अनुकूल है। बुवाई के दौरान ठीक तापमान 14°–15° सेल्सीयस होना चाहिए। गुलमेंहदी के लिए 5.5 से 7.0 pH वाली अच्छी जल निकास वाली दोमट मिट्टी की आवश्यकता होती है। जब पीएच 5.0 से नीचे हो, तो डोलोमाइट 2.5 टन/हेक्टेयर की दर से डालना चाहिए और मिट्टी में अच्छी तरह मिला देना चाहिए।

बुवाई के लिए भूमि की तैयारी

भूमि को दो बार अच्छी तरह से जोत कर भुरभुरा बना लें। आखिरी जुताई के समय 2 टन प्रति हेक्टेयर अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद और 500 किलोग्राम नीम की खली डालकर अच्छी तरह मिला देना चाहिए। सुविधाजनक आकार की 30 से.मी. ऊंचाई, 1.5 मीटर चौड़ाई और लंबाई की क्यारियां तैयार करें। रोपण के समय 5 किलोग्राम एजोस्पिरिलम और 5 किलोग्राम फॉस्फोबैक्टीरियम को मिट्टी में डालकर अच्छी तरह मिला देना चाहिए।

कटिंग की तैयारी और रोपण प्रक्रिया

कटिंग का चयन: फूल आने से पहले 10–15 सेंटीमीटर लंबाई की अर्ध–दृढ़ लकड़ी से कटिंग लें। ऊपर के कुछ पत्तों को छोड़ दें, जबकि बाकी पत्ते रोपण से पहले हटा दें।

रोपण मिश्रण: कटिंग को जड़ उगाने के लिए पॉलिथीन बैग में मिट्टी, रेत और पत्ती के खाद के मिश्रण में लगाएं।

घोल का उपयोग: रोपण से पहले, कटिंग को 3ः पंचगव्य घोल या 10ः सीपीपी घोल में 20 मिनट तक भिगोया जा सकता है। इससे कटिंग के जड़ने की संभावना बढ़ जाती है।

सुरक्षा और पानी देना: कटिंग वाले थैलों को छाया में रखें और उन्हें दिन में दो बार पानी दें। जड़ निकलने का समयरू जड़ों वाली कटिंग 60 दिनों के अंदर मुख्य खेत में रोपाई के लिए तैयार हो जाएंगी।

रोपण का तरीका

गुलमेंहदी की खेती करते समय अच्छे और स्वस्थ्य बीजों का उपयोग करें, जिससे फसल को कोई नुकसान नहीं होगा। पौधों को पहले बीज द्वारा नर्सरी में तैयार कर ले। जब पौधे खेत में रोपने योग्य हो जाता है, तो उसे 45 X 45 से.मी. की दूरी पर रोपना चाहिए। पौधे को नर्सरी में तैयार करने के बाद, मिट्टी में आवश्यक खाद मिलने के बाद बीज बोया जाना चाहिए।

कटाई और पैदावार

बुवाई के बाद, गुलमेंहदी का पौधा कई साल तक उपज देता रहता है। बुआई के चार महीने बाद पचास प्रतिशत फूल आने पर कोमल हिस्से को काटकर उपज ले सकते है, हरे पत्तो की उपज 12–13 जधिं तक ले सकते हैं। फसल से 2.5 क्विंटल हेक्टेयर सुखी पत्तियों की उपज ले सकते है।

SONALIKA
LEADING AGRI EVOLUTION

आधुनिक टेक्नोलॉजी बेमिसाल ताक़त

SONALIKA TIGER DI 65 4WD

सबसे बड़ा
CRDS इंजन
4712 CC

इंजन
65 HP पॉवर
55 HP ईंधन माइलेज

ट्रेम स्टेज-IV

क्लियोम का फूल: कैसे उगाया जाता है क्लियोम का पौधा?

क्लियोम एक फूल की प्रजाति है जो की कई कामों के लिए इस्तेमाल किया जाता हैं। Cleome एक आकर्षक पौधा हैं जिसको विशेष रूप से बागवानी में सजावटी पौधे के रूप में उगाया जाता हैं। ये एक रैंगिंग फूल वाला पौधा हैं जो की बगीचों में एक आकर्षण के लिए बनाया जाता हैं। इसका वैज्ञानिक नाम क्लियोम हैसलेरियाना हैं, क्लियोम के पौधे को सूरजमुखी के साथ भी आसनी से उगाया जा सकता हैं।

क्लियोम की विशेषताएँ

क्लियोम के पौधों को गर्मी के मौसम में उगाया जाता हैं। इसके वैरायटी के आधार पर कई प्रकार होते हैं। क्लियोम की ऊंचाई पौधे की वैरायटी के आधार पर अलग अलग होती हैं। इसकी ऊंचाई 1½– से 5–फीट तक होती हैं और ये पौधा 1– से 2–फीट तक फैलता हैं। इसके अलावा बौनी किस्मों की लंबाई 1½ – से 4–फीट तक हो सकती हैं और 2 फिट तक चौड़ाई होती हैं। इसमें गुलाबी, बैंगनी, सफेद और लैवेंडर के फूल ध्यान देने योग्य सुगंध नहीं छोड़ते हैं, फिर भी हमिंगबर्ड, तितलियाँ और हमिंगब. र्ड पतंगे पूरी गर्मियों में इन फूलों की ओर आकर्षित होते हैं।

क्लियोम की प्रजातियाँ

क्लियोम की 100 से भी ज्यादा प्रजातियाँ पायी जाती हैं। इनमे से कुछ किस्मे ऐसी हैं जिनको बगीचों में उगाया जा सकता हैं।

क्लियोम की सी. हैसलेरियाना किस्म अपने रंग और फूल की क्वॉलिटी के कारण अधिक लोकप्रिय बना हुआ हैं, इसके प्रकार निम्नलिखित हैं –

1. हेलेन कैम्पबेल

ये क्लियोम की एक ऐसी किस्म हैं जिसमे सफेद फूल आते हैं, इसकी किस्म की बुवाई के बाद अधिक देखभाल की आवश्यकता नहीं होती हैं।

2. आर्मस्ट्रांग किस्म

इसका फूल गुलाबी या बैंगनी रंग का होता है, और यह 12 से 18 इंच लंबा, बाँझ और कांटे रहित होता है।

3. रोज क्वीन

रोज क्वीन एक सुगंधित, आकर्षक नाम है। यह गुलाब, सफेद, चेरी और बैंगनी रंगों में आता है। प्रत्येक पत्ती के आधार पर उगने वाली कांटों को देखें।

4. स्पिरिट सीरीज

स्पिरिट सीरीज के पौधे 2 से 4 फुट ऊंचे हैं और बेहतर शाख. ायुक्त वृद्धि की आदत रखते हैं, लेकिन उनमें कांटे और चिपचिपे पत्ते होते हैं। लैवेंडर, गुलाबी या सफेद रंग के फूल होते हैं।

क्लियोम कैसे उगाएं ?

क्लियोम की बुवाई सीधी बीज से की जा सकती हैं, बुवाई के लिए बगीचे को अच्छे से तैयार कर ले। बुवाई के लिए उत्तम बीज का चुनाव करना चाहिए। इसके बीज स्थानीय नर्सरी, बागवानी केंद्र या ऑनलाइन बागवानी स्टोर्स से प्राप्त किए जा सकते हैं। बीजों को अंकुरित करने के लिए प्रकाश की जरूरत होती है, इसलिए आप उन्हें बगीचे में छिड़क सकते हैं जब ठंढ का खतरा टल जाए और मिट्टी का तापमान 20-25°C हो जाएगा। दस दिनों के बाद इसके बीजो का अंकुरण हो जाता हैं। क्लियोम के बीजों को गर्मियों के अंत या वसंत ऋतू के अंत में बोया जा सकता हैं।

ककोरा क्या हैं और इसकी खेती कैसे की जाती हैं?

ककोरा कद्दूवर्गीय स्वास्थ्यवर्धक सब्जी हैं, ये भारत में कई स्थानों पर उगाया जाता हैं। ककोरा को अन्य कई नामों से जाना जाता हैं जैसे कि ककोड़ा, किंकोड़ा या खेख्सा आदि। इसका वैज्ञानिक नाम Momordica dioica हैं। ये ज्यादातर पहाड़ी जमीन में आपने आप भी उग जाता हैं। इसकी बेल होती हैं जो कि जंगलों–झड़ियों में उग जाती हैं। लोग ककोरा की सब्जी के रूप में बहुतायत से उपयोग करते हैं।

ककोरा की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

ककोड़ा की खेती के लिए गर्म जलवायु उपयुक्त मानी जाती हैं, ये उन क्षेत्रों में आसनी से उगता हैं जहा पर गर्म एवं नम जलवायु रहती हो। इसकी खेती के लिए तापमान 25 डिग्री सेल्सियस से ऊपर होना चाहिए। इसकी खेती के लिए वार्षिक वर्षा 1500–2500 मि.ली. होनी बहुत आवश्यक हैं। ककोरा की फसल को 20–30 डिग्री सेल्सियस तापमान की आवश्यकता होती हैं।

ककोरा की खेती के लिए मिट्टी या भूमि की स्थिति

ककोरा की खेती कई प्रकार की मिट्टी में आसानी से हो सकती हैं। इसकी खेती के लिए दोमट मिट्टी जिसमें पर्याप्त मात्रा में जैविक पदार्थ हो तथा जल निकास की उचित व्यवस्था हो अच्छी मानी जाती हैं। मिट्टी का पी.एच. मान 6–7 के बीच होना चाहिए।

ककोरा की उन्नत किस्में

अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए किस्मो का चुनाव बहुत आवश्यक माना जाता हैं। इसकी कई उन्नत किस्में हैं जिनकी बुवाई करके आप अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। इंदिरा कंकोड़–1, अम्बिका–12–1, अम्बिका–12–2, अम्बि. का–12–3 आदि ककोरा की उन्नत किस्में हैं जो की अच्छा उत्पादन देती हैं।

बुवाई के लिए बीज की मात्रा

इसकी बुवाई के लिए 8–10 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर बीज की आवश्यकता होती हैं। सही बीज जिसमें कम से कम 70–80 प्रतिशत तक अंकुरण की क्षमता हो ऐसे बीज का चुनाव करें।

ककोरा की बुवाई करने की विधि

ककोड़ा की फसल से अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए खेत में पर्याप्त मात्रा में पौधों की आवश्यकता होती है।

इस फसल को अच्छी तरह से तैयार खेत में क्यारी में या गड्ढों में बोया जा सकता है। गड्ढे में दो मीटर की दूरी होनी चाहिए। तथा प्रत्येक गड्ढे में दो से तीन बीज लगाएँ। इस तरह, चार मीटर चौड़े प्लाट में नौ गड्ढे बनते हैं। जिसमें बीच वाले गड्ढे में नर पौधे, जबकि अन्य आठ गड्ढों में मादा पौधे हो। यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि एक गड्ढे में एक ही पौधा लगाया जाए।

उगने के बाद पौधों को सहारा

ककोरा की बेल बनती हैं इसलिए इसके पौधे को सहारा देना बहुत आवश्यक होता हैं। पौधों को सहारा देने को स्टेकिंग भी कहते हैं। स्टेकिंग करने से बेल का विकास अच्छा होता हैं तथा गुणवत्तापूर्ण फल प्राप्त करने के लिए सूखी लकडियों की टहनी या बांस का सहारा लेना चाहिए। ककोड़ा एक बहुवर्षीय फसल है, इसलिए पौधों को सहारा देने के लिए लोहे के एंगल पर 5–6 फीट ऊंची, 4 फीट गोलाकार तार लगा सकते हैं।

ककोरा की फसल में खाद और उर्वरक प्रबंधन

ककोरा की फसल में 200 से 250 क्विंटल प्रति हेक्टेयर अच्छी सड़ी हुई गोबर खाद देनी बहुत आवश्यक होती हैं। खेत में इसके अलावा प्रति हेक्टेयर की दर से 65 कि.ग्रा. यूरिया, 75 कि.ग्रा. एसएसपी तथा 67 कि.ग्रा. एमओपी आदि फसल में दे।

ककोरा की फसल से मुनाफा

इस सब्जी की बाजार में अच्छी कीमत हैं जिससे अगर किसान इसकी खेती करते हैं तो इससे अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं, ककोड़ा की सब्जी आजकल 90 से 100 रुपये प्रति किग्रा के बीच बाजार में मिलता है। किसान की आर्थिक स्थिति इससे मजबूत होती है। ककोड़ा की सब्जी स्वादिष्ट होती है और संतुलित आहार में महत्वपूर्ण है। ककोड़ा की सब्जी पौष्टिक गुणों से भरपूर है। ककोड़ा के हरे फलों की सब्जी में नौ से दस कड़े बीज होते हैं।

नारियल का पेड़ कैसे उगायें, इसकी खेती से जुड़ी विस्तृत जानकारी

नारियल की खेती की प्रमुख खासियत यह है कि यह एक लंबी आयु वाली फसल है, जो 60 से 80 वर्षों तक फल देती है, जिससे किसान को लंबे समय तक आय प्राप्त होती है। नारियल का पेड़ 7–8 साल में फल देना शुरू करता है और नियमित रूप से उत्पादन जारी रखता है। यह खेती विशेष रूप से उष्णकटिबंधीय और तटीय क्षेत्रों के लिए उपयुक्त होती है, जहां पर्याप्त नमी और गर्म जलवायु होती है। नारियल के प्रत्येक भाग का उपयोग होता है कृ गूदा खाने योग्य, पानी स्वास्थ्यवर्धक, और छिलके, पत्ते तथा लकड़ी से विभिन्न उत्पाद जैसे रस्सी, चटाई, और फर्नीचर बनाए जा सकते हैं। कम पानी की आवश्यकता और सूखे में भी अनुकूलता के कारण यह फसल किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण विकल्प है। इस लेख में आप नारियल की खेती से जुडी सम्पूर्ण जानकरी के बारे में जानेंगे।

नारियल का पेड़ उगाने के लिए उपयुक्त जलवायु

नारियल के पेड़ को अलग–अलग जलवायु और मिट्टी की परिस्थितियों में उगाया जाता है। यह मूलतः एक उष्णक. टिबंधीय पौधा है, जो अधिकतर 20° उत्तर और 20° दक्षिण अक्षांशों के बीच उगता है। आदर्श माध्य तापमान नारियल की वृद्धि और उपज के लिए 27±5°C और सापेक्षिक आर्द्रता 60 प्रतिशत से अधिक होनी चाहिए। हालाँकि, भूमध्य रेखा के निकट, उत्पादक नारियल के बागान लगभग 1000 मीटर की ऊंचाई तक स्थापित किए जा सकते हैं।

हालाँकि, प्रति वर्ष लगभग 2000 मि.मी. की अच्छी तरह से वितरित वर्षा उचित विकास के लिए सर्वोत्तम है। कम वर्षा तथा असमान वितरण वाले क्षेत्रों में सिंचाई की आवश्यकता होती है। नारियल को बहुत अधिक धूप की आवश्यकता होती है और यह छाया में या बहुत अधिक बादलों में अच्छी तरह से विकसित नहीं होता है।

नारियल की खेती के लिए मिट्टी की आवश्यकता

आपकी जानकारी के लिए बता दे कि लाल बलुई दोमट मिट्टी, लेटराइट और जलोढ़ मिट्टियाँ नारियल की खेती के लिए उपयुक्त हैं। नारियल के पेड़ को उगाने के लिए ऐसे स्थानों का चयन करें जहाँ गहरी (कम से कम 1.5 मीटर गहराई) और अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी हो। भारी, अपूर्ण रूप से जल निकासी वाली मिट्टी उपयुक्त नहीं होती। उथली मिट्टी, जिसके नीचे कठोर चट्टान हो, कम गहराई वाली मिट्टी, जलजमाव वाले निचले क्षेत्रों और भारी चिकनी मिट्टी से बचें। नारियल की खेती के लिए 1.2 मीटर की न्यूनतम गहराई और अच्छी जल धारण क्षमता वाली मिट्टी अच्छी मानी जाती है। हालांकि, रेत और चिकनी मिट्टी की परतों को एक के ऊपर एक रखकर पुनः प्राप्त की गई भूमि में नारियल अच्छी तरह उगता है। पर्याप्त जल निकासी और अच्छी तरह से वितरित वर्षा या सिंचाई के माध्यम से नमी की उचित आपूर्ति नारियल की खेती के लिए आवश्यक है। नारियल 5-2 – 8-6 पीएच वाली मिट्टी में उगाया जा सकता है।

नारियल के पेड़ रोपण के लिए भूमि की तैयारी

रोपण से पहले भूमि की तैयारी की प्रकृति कई पर्यावरणीय कारकों पर निर्भर करती है, जैसे भूमि की स्थलाकृति और मिट्टी का प्रकार। क्षेत्र को साफ करके उचित स्थानों पर रोपण गड्ढे चिह्नित करना चाहिए। मृदा संरक्षण के तरीके अपनाना चाहिए अगर जमीन ढलानदार होनी चाहिए। टीलों में पौधारोपण करना संभव है अगर भूजल स्तर ऊंचा होता है। ढलानों पर और लहरदार भूभाग वाले क्षेत्रों में समोच्च सीढ़ी या मेड़ लगाकर जमीन तैयार करें। चावल के खेतों और निचले क्षेत्रों में जल स्तर से 1 मीटर की ऊंचाई पर टीले बनाएं। **पुनः** प्राप्त कायल क्षेत्रों में खेत की मेड़ों पर रोपण किया जा सकता है।

नारियल रोपण के लिए नर्सरी की तैयारी

नर्सरी बनाने के लिए अच्छी जल निकासी वाली मोटी मिट्टी का चयन किया जाना चाहिए। बीजों को समतल क्यारियों में बोया जा सकता है अगर जल निकासी में कोई समस्या नहीं है। यदि जल जमाव की समस्या है तो बीजों को ऊँची क्यारियों में बोना चाहिए। नर्सरी ऐसे स्थान पर बन सकती है या तो खुले में कृत्रिम छाया के साथ या ऊंची जमीन वाले बगीचों में पूरी तरह से छाया वाले स्थान पर। बीज नट्स को एक दूरी पर लंबी, संकरी क्यारियों में बोना चाहिए। 40 से.मी. x 30 से.मी., या लंबवत या क्षैतिज रूप से 20 से.मी. से 25 से.मी. गहरी खाइयों में मई से जून तक बोया जाना चाहिए। केवल अच्छी गुणवत्ता वाले पौधे ही लगाए जाने चाहिए। रोपण के लिए चयनित नर्सरी में पौधे एक वर्ष पुराने 5–6 पत्तियों के साथ 100 से.मी. से अधिक ऊंचाई और कॉलर की परिधि 10 से.मी. हो ऐसे पौधे चुनने चाहिए। बौनी किस्मों में पौध का घेरा एवं ऊंचाई अच्छी गुणवत्ता वाली होनी चाहिए। अच्छी पौध के चयन के लिए पत्तियों का जल्दी टूटना एक अन्य पसंदीदा लक्षण है। आमतौर पर, एक वर्ष पुराने पौधे रोपण के लिए बेहतर होते हैं। हालाँकि, जल–जमाव वाले क्षेत्रों में रोपण के लिए, डेढ़ से दो साल पुराने पौधों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

रोपण के समय पौधे से पौधे की दुरी

नारियल से बेहतर उपज प्राप्त करने के लिए, खेत में इष्टतम पौध घनत्व बनाए रखा जाना चाहिए। आमतौर पर वर्गाकार प्रणाली में 7.5 मीटर x 7.5 मीटर से 8.0 मीटर x 8.0 मीटर की दूरी की सिफारिश की जाती है। नारियल के लिए प्रति हे. क्टेयर क्रमश 177 और 156 नारियल के पौधे लगने की आवश्यकता होती है। यदि त्रिकोणीय प्रणाली अपनाई जाए तो अतिरिक्त 25 पाम पौधे लगाए जा सकते हैं। साथ ही पंक्तियों के बीच 6.5 मीटर और पंक्तियों के बीच 9.5 मीटर की दूरी रखने को अपनाया जाता है। सुविधा देने के लिए नारियल के बगीचों में बहुफसली खेती के लिए 10 मीटर x 10 मीटर की अधिक दूरी रखने की सलाह दी जाती है ताकि कई बारहमासी और वार्षिक फसलों को समायोजित करने का पर्याप्त अवसर प्रदान किया जा सके।

रोपण का समय

अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी में, पौधों को जून में दक्षिण–पश्चिम मानसून की शुरुआत के साथ या अक्टूबर–नवंबर में उत्तर–पूर्व मानसून की शुरुआत के साथ प्रत्यारोपित किया जा सकता है। निचले क्षेत्रों में, जो मानसून के दौरान जलमग्न हो सकते हैं, वहां पौधों को मानसून के समाप्त होने के बाद लगाना अधिक उचित होता है।

पडलिंग का मास्टर ब्लास्टर
श्रेष्ठ पडलिंग मास्टर
JK TYRE
TOTAL CONTROL
इसके विशेष डिज़ाइन से मिले गीली मिट्टी में भी बेहतरीन ग्रिप
*STANDARD
7
YEARS
WARRANTY
मज़बूत टाई-बार
बेहतर लग स्पेसिंग
और ज़्यादा गहरा ट्रेड
नई तकनीक से बना
Mud Shaker
SHRESTH
JK TYRE
उपलब्ध साइज़:
13.6 - 28 I 14.9 - 28
#9.50 - 20 I 16.9 - 28
#Coming soon.
*T&C apply

20 HP के टॉप 5 ट्रैक्टर जो बागवानी को बनाएंगे आसान

ट्रैक्टर एक कृषि मशीन है जो खेती को आसान बनाती है। यह मुख्य रूप से फसल काटना, बीज बोना, भूमि की जुताई और अन्य कृषि कार्यों में उपयोग किया जाता है। विभिन्न प्रकार के कृषि उपकरणों को खींचने और चलाने की क्षमता से ट्रैक्टर खेती की उत्पादकता और दक्षता को बढ़ाता है। खेती में जमीन के आधार पर और कार्य के आधार पर ट्रैक्टर की आवश्यकता होती हैं, ऐसे में बागवानी करने वाले किसानों को पता नहीं होता की इनको किस एचपी तक के ट्रैक्टरों की आवश्यकता हैं। इसी बात का ध्यान रखते हुए हम आपके लिए लेकर आए हैं टॉप 20 hp ट्रैक्टर्स, जो की खास कर बागवानी जैसे कार्यों के लिए बनाए गए हैं।

20 hp के टॉप 5 ट्रैक्टर्स के फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

बागवानी के काम के लिए खास कर 20 एचपी तक के ट्रैक्टरों का इस्तेमाल किया जाता हैं, इन ट्रैक्टरों में शामिल हैं – मैसी फर्ग्यूसन 5118, सोनालीका GT-20 DI, इंडो फार्म 1020 DI, महिंद्रा जीवो 225 DI, न्यू हॉलैंड सिम्बा 20 आदि।

1. मैसी फर्ग्यूसन 5118

- मैसी फर्ग्यूसन 5118 ट्रैक्टर खास कर बगवानी और छोटी खेती के लिए बनाया गया हैं। इस ट्रैक्टर के इंजन की बात करें तो इस ट्रैक्टर में कंपनी ने 20 HP का इंजन दिया हैं जो की 2400 RPM बनाता हैं।
- मैसी फर्ग्यूसन 5118 ट्रैक्टर के इंजन में 1 सिलिंडर दिया गया हैं।
- ट्रैक्टर के इंजन को ठंडा रखने के लिए इसमें लिक्विड कूल्ड कूलिंग सिस्टम दिया गया हैं।
- इस ट्रैक्टर की पीटीओ पावर 17-2 hp की दी गयी हैं।
- ट्रैक्टर में Dyp Single diaphragm Clutch दिया गया हैं, इस ट्रैक्टर में गियरबॉक्स 8 फॉरवर्ड 2 रिवर्स गियर्स दिए गए हैं।
- ट्रैक्टर को नियंत्रित करने के लिए इस ट्रैक्टर में आपको तेल में डूबे ब्रेक मिल जाते हैं।
- ट्रैक्टर में वजन उठाने की क्षमता 750 किलोग्राम दी गयी हैं।
- साथ ही इस ट्रैक्टर में फ्रंट टायर 5-00 X 12 और 8.00 x 18 रियर टायर दिए गए हैं।
- इस ट्रैक्टर की कीमत 4.28 लाख रूपए तक हैं।

2. सोनालीका GT-20 DI

- यह ट्रैक्टर सोनालिका ट्रैक्टर निर्माता द्वारा निर्मित है। सोनालिका GT-20 DI ट्रैक्टर एक 20 एचपी का ट्रैक्टर है।
- सोनालिका ळज–20 क्प ट्रैक्टर की इंजन की क्षमता 959 सीसी है और इसमें 3 सिलेंडर है जो कि इंजन रेटेड 2700 आरपीएम उत्पन्न करते हैं।
- इस ट्रैक्टर के वजन उठाने की क्षमता 650 किलोग्राम दी गयी हैं।

- ट्रैक्टर में 5-00 X 12 के फ्रंट टायर और 8-00 X 18 के रियर टायर मिल जाते हैं।
- इस ट्रैक्टर की पीटीओ पावर 14.1 एचपी है, साथ ही इस ट्रैक्टर में स्लाइडिंग मेश का ट्रांसमिशन आपको मिल जाता हैं।
- इस ट्रैक्टर में मैकेनिकल स्टीयरिंग आपको मिलता हैं।
- इस ट्रैक्टर की कीमत की बात करें तो इस ट्रैक्टर की कीमत 3.60–3.90 लाख रूपए तक हैं।

3. इंडो फार्म 1020 DI

- इंडो फार्म 1020 DI एक छोटा और मजबूत ट्रैक्टर है जो हल्के और मध्यम कृषि कार्यों के लिए बनाया गया है।
- इंडो फार्म 1020 DI ट्रैक्टर में एक–सिलिंडर, 20 HP (हॉर्सपावर) डीजल इंजन है।
- इसमें छह आगे और दो पीछे गियर हैं।
- ट्रैक्टर में तेल में भरे कई डिस्क ब्रेक हैं।
- Mechanical & Recirculating ball type (optional) स्टीयरिंग आपको इस ट्रैक्टर में मिल जाता हैं।
- ट्रैक्टर में 540 पीटीओ स्पीड दी गई है, जो कृषि उपकरणों जैसे रोटावेटर और स्प्रेयर के लिए उपयुक्त है।
- ट्रैक्टर को स्थिरता और संतुलन देने के लिए इसमें 5-00 x 12 सामने के टायर और 8-00 x 18 पीछे के टायर हैं।
- इस ट्रैक्टर में लगभग 750 किलोग्राम की लिफ्ट क्षमता है।
- इस ट्रैक्टर की कीमत 4.40–4.55 लाख तक हैं।

4. महिंद्रा जीवो 225 DI

- महिंद्रा जीवो 225 DI में 20 एचपी का इंजन आता हैं, इसमें 2 सिलेंडर हैं जो 2300 इंजन रेटेड आरपीएम पर चलते हैं।
- इस ट्रैक्टर की पीटीओ पावर 18.4 एचपी दी गयी हैं।
- ट्रैक्टर में स्लाइडिंग मेश का ट्रांसमिशन मिल जाता हैं, जिसमे 8 फॉरवर्ड. 4 रिवर्स गियर्स दिए गए हैं।
- महिंद्रा जीवो 225 DI ट्रैक्टर को नियंत्रित करने के लिए इस ट्रैक्टर में आपको तेल में डूबे ब्रेक मिल जाते हैं।
- इस ट्रैक्टर को नियंत्रित करने के लिए इसमें Oil Immersed Brake मिल जाते हैं।
- ट्रैक्टर की वजन उठाने की क्षमता 750 किलोग्राम हैं।
- ट्रैक्टर में 5-00 x 14 के फ्रंट टायर और 8-00 x 24 के रियर टायर आपको मिल जाते हैं।
- ट्रैक्टर की कीमत 4.62–4.90 लाख रूपए तक हैं।

5. न्यू हॉलैंड सिम्बा 20

- ये ट्रैक्टर खास कर बागवानी के कार्य के लिए बनाया गया हैं। ये ट्रैक्टर आकर्षक डिजाइन के साथ एक अद्भुत और शक्तिशाली ट्रैक्टर हैं। यह ट्रैक्टर 17 एचपी के साथ आता है।
- न्यू हॉलैंड सिम्बा 20 की इंजन कैपेसिटी अच्छी माइलेज प्रदान करती है।
- इस ट्रैक्टर में 947.4 CC का इंजन मिल जाता हैं, ट्रैक्टर में स्लाइडिंग मेश ट्रांसमिशन मिल जाता हैं।
- इस ट्रैक्टर में 8 फॉरवर्ड. 2 रिवर्स गियरबॉक्स मिल जाता हैं।
- आयल इम्मरसेड ब्रेक से न्यू हॉलैंड सिम्बा 20 ट्रैक्टर को आसानी से नियंत्रित किया जा सकता हैं।
- न्यू हॉलैंड सिम्बा 20 ट्रैक्टर की वजन उठाने की क्षमता 750 Kg हैं।
- न्यू हॉलैंड सिम्बा 20 ट्रैक्टर की कीमत की बात करें तो इस ट्रैक्टर की कीमत 4.10–4.30 लाख रूपए तक हैं।

महिंद्रा जीवो 365 DI 4WD: धान की खेती के लिए बेस्ट 36 एचपी ट्रैक्टर

महिंद्रा जीवो 365 DI 4WD 36 एचपी ट्रैक्टर धान की खेती के लिए विशेष रूप से डिजाइन किया गया है, और यह पडलिंग के लिए एक उत्कृष्ट विकल्प है। इसका शक्तिशाली डीआई इंजन उच्च प्रदर्शन और बेहतरीन माइलेज प्रदान करता है। यह ट्रैक्टर भारत का पहला ऐसा ट्रैक्टर है, जिसमें पोजीशन–ऑटोकंट्रोल (PAC) तकनीक है, जो बिना लगातार एडजस्टमेंट के पडलिंग में सहायता करता है। जब इस ट्रैक्टर को महिंद्रा के 1.6 मीटर मित्र जायरोवेटर के साथ इस्तेमाल किया जाता है, तो यह खेत को समतल रखता है और गीले क्षेत्रों में बिना फंसे बेहतर पडलिंग करता है।

महिंद्रा जीवो 365 DI 4WD इंजन

महिंद्रा जीवो 365 DI 4WD 2048 cc का इंजन और 36 एचपी की पावर के साथ आता है। यह 2600 आरपीएम पर काम करता है और 118 Nm तक का अधिकतम टॉर्क उत्पन्न करता है। इसमें 32.2 एचपी पावर टेक–ऑफ (PTO) के साथ मल्टी–स्पीड PTO सुविधा है, जो 590/845 RPM उत्पन्न करता है।

ट्रांसमिशन और गियर बॉक्स

इसमें कांस्टेंट मेश या स्लाइडिंग मेश ट्रांसमिशन और सिंगल ड्राई क्लच दिया गया है। ट्रैक्टर में 8 फॉरवर्ड और 8 रिवर्स गियर हैं, जिसमें फॉरवर्ड स्पीड 1.7 से 23.2 कि.मी.ध्घंटा और रिवर्स स्पीड 1.6 से 21.8 कि.मी./घंटा है।

अन्य फीचर्स

- PTO की अधिकतम पावर 22.4 kW (30 HP) है, महिंद्रा जीवो 365 DI 4WD ट्रैक्टर की लिफ्टिंग कैपेसिटी 900 किलोग्राम है।
- महिंद्रा जीवो 365 DI 4WD ट्रैक्टर में कुल वजन 1750 किलोग्राम है।
- ट्रैक्टर का व्हीलबेस 1650 mm का है।
- इस ट्रैक्टर की कुल लम्बाई 3050 mm है और ट्रैक्टर की कुल ूपकजी 1410mm है।
- महिंद्रा जीवो 365 DI 4WD ट्रैक्टर में ग्राउंड क्लीयरेंस भी काफी अच्छा देखने को मिलता है। इस ट्रैक्टर में आपको 390 उउ का ग्राउंड क्लीयरेंस मिलता है।

- महिंद्रा जीवो 365 DI 4WD ट्रैक्टर में टायरों की बात करे तो ट्रैक्टर में फ्रंट टायरों का आकर 800x16 और पिछले टायरों का आकर 12 4x24 आता है।

महिंद्रा जीवो 365 DI 4WD की कीमत क्या है?

इस ट्रैक्टर की कीमत की बात करे तो इस ट्रैक्टर की कीमत ₹5.75 – ₹5.98 लाख रूपए तक मिलती है। कई स्थानों पर कीमत में आपको थोड़ा फरक भी मिल सकता है। इस कीमत में ये ट्रैक्टर धान के किसानो के लिए बिलकुल सही विक्लप है। किसान भाइयों मेरीखेती की इस पोस्ट में आपको महिंद्रा जीवो 365 क्ष 4क ट्रैक्टर के फीचर्स, स्पेसिफिकेशन्स और कीमत के बारे में जानकारी दी गई है।

रोटावेटर: खेती में इसका महत्व और उपयोग

रोटावेटर, जिसे रोटरी टिलर भी कहते हैं, एक कृषि उपकरण है जो बीज बोने से पहले मिट्टी तैयार करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। यह ट्रैक्टर से जुड़कर काम करता है और मिट्टी को घुमा–घुमा कर उसका ढांचा तैयार करता है। इसमें घूमने वाले ब्लेड होते हैं जो मिट्टी को ढीला करके छोटे टुकड़ों में तोड़ते हैं और पिछले फसलों के अवशेषों को मिट्टी में मिला देते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य मिट्टी के बड़े टुकड़ों को तोड़कर बीज बोने के लिए तैयार करना है।

रोटावेटर डिजाइन

- रोटावेटर का मुख्य उद्देश्य फसल के बीज बोने के लिए मिट्टी में ढेलों को तोड़ना है। किस रोटरी टिलर का उपयोग करना चाहिए, उस क्षेत्र की मिट्टी की बनावट पर निर्भर करता है, बाजार में कई प्रकार के रोटरी टिलर उपलब्ध हैं।
- रोटरी टिलर का डिजाइन ऐसा है कि इसे विभिन्न गति से चलाने के लिए समायोजित किया जा सकता है, जिससे ब्लेड को आवश्यकतानुसार तेज या धीमी गति से घुमाया जा सकता है।
- रोटावेटर या रोटरी टिलर को मिट्टी को तोड़ने के लिए किसी विशेष क्षेत्र में ट्रेंचिंग के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है जहां मिट्टी की मोटी परत इसे जोतने से रोकती है। ऐसे क्षेत्र में ट्रेंचिंग मिट्टी पानी से भर जाती है।
- रोटावेटर में अंतर–परिवर्तनीय ब्लेड और पुर्जे हैं, जो श्रेडर और ग्राइंडर की तरह फिर से जोड़ा जा सकते हैं। उनका उपयोग बढ़ती फसलों के आसपास हवा देने और खरपतवारों को नियंत्रित करने में किया जाता है।
- रोटरी टिलर भी खाद को मिलाने और मिट्टी में जैविक पदार्थों को मिलाने में उपयोगी हैं।

रोटावेटर से हर प्रकार की मिट्टी में हो सकती है जुताई

- कृषि रोटरी टिलर ट्रैक्टर से जोड़ा जा सकता है। इन मशीनों को पहले चावल के खेतों में प्रयोग किया जाता था, लेकिन आज इन मशीनों को आर्द्रभूमि और शुष्क भूमि दोनों में खेती के कार्यों में प्रयोग किया जाता है।
- रोटावेटर विकासशील देशों में छोटे खेतों की जुताई में चार पहिया ट्रैक्टरों के विश्वसनीय विकल्प हैं क्योंकि वे छोटे, शक्तिशाली और किफायती कृषि उपकरण हैं।

मैसी फर्ग्यूसन 2635 4WD ट्रैक्टर: 75 HP श्रेणी में बेस्ट पावर और परफॉर्मेंस वाला विकल्प

मैसी फर्ग्यूसन 2635 ट्रैक्टर, 75 HP श्रेणी में सबसे शक्तिशाली विकल्पों में से एक है। इसका इंजन आकार में बड़ा है और यह हर प्रकार के कृषि कार्य के लिए उपयुक्त है। आइए मैसी फर्ग्यूसन 2635 ट्रैक्टर के फीचर्स, स्पेसिफिकेशन, और कीमत के बारे में विस्तार से जानते हैं।

मैसी फर्ग्यूसन 2635 4WD ट्रैक्टर का इंजन पावर

- इस ट्रैक्टर में कंपनी ने SIMPSONS T III A TSJ 436 इंजन का उपयोग किया है।
- यह इंजन 4 सिलेंडर का है और इसकी क्यूबिक क्षमता 3600 cc है।
- ईंधन इंजेक्शन के लिए इसमें रोटरी पंप का उपयोग किया गया है।
- ट्रैक्टर में स्प्लिट टॉर्क क्लच दिया गया है जो इसे कार्यक्षमता में बढ़ावा देता है।

मैसी फर्ग्यूसन 2635 4WD ट्रैक्टर के फीचर्स और स्पेसिफिकेशन

- ट्रांसमिशन के लिए इसमें पार्टियल सिंक्रोमेश सिस्टम है।
- इसके गियरबॉक्स में 12 फॉरवर्ड और 4 रिवर्स गियर मिलते हैं।
- इसके आगे के टायर 12-4 x 24 (31-49 cm x 60-96 cm) और पीछे के टायर 18-4 x 30 (46-73 cm x 76-2 cm) आकार के हैं।
- इस ट्रैक्टर की अधिकतम फॉरवर्ड स्पीड 33.6 किलोमी. टर प्रति घंटा है।

PTO और हाइड्रोलिक्स

- इसमें IPTO प्रकार का PTO दिया गया है, जिसकी स्पीड 540 RPM है और इसे 1790 ERPM पर प्राप्त किया जा सकता है।
- इसकी हाइड्रोलिक्स लिफ्टिंग क्षमता (लॉवर लिंक क्षैतिज स्थिति पर) 2145 किलोग्राम है, जिससे यह भारी उपकरणों को उठाने में सक्षम है।
- ब्रेक सिस्टम में तेल में डूबे हुए ब्रेक्स का उपयोग किया गया है, जिससे ब्रेकिंग प्रभावी और सुरक्षित होती है।

वेरिएंट और स्टीयरिंग

मैसी फर्ग्यूसन 2635 ट्रैक्टर दोनों वेरिएंट्स में उपलब्ध है - 2WD और 4WD। पावर स्टीयरिंग के कारण इसे संकरी जगहों में भी मोड़ना आसान है, जो इसे चालक के लिए बहुत आरामदायक बनाता है।

बैटरी, आकार, और वजन

- इस ट्रैक्टर में 12 V 100 Ah बैटरी और 12 V 45 । का अल्टरनेटर है।
- इसकी कुल लंबाई 4107 mm, चौड़ाई 2093 mm, और ऊंचाई 2394 mm है।
- इसका व्हीलबेस 2245 mm और कुल वजन 3490 किलोग्राम (4WD) / 3160 किलोग्राम (2WD) है।

ईंधन टैंक क्षमता और वारंटी

इसका ईंधन टैंक 85 लीटर का है, जिससे एक बार में अधिक मात्रा में डीजल भरा जा सकता है और ट्रैक्टर को लंबे समय तक कार्यशील रखा जा सकता है। कंपनी इस ट्रैक्टर पर 2100 घंटे या 2 साल की वारंटी देती है।

मैसी फर्ग्यूसन 2635 4WD ट्रैक्टर की कीमत

मैसी फर्ग्यूसन 2635 4WD ट्रैक्टर की कीमत 14.50 लाख से 15.70 लाख रुपए तक है। कीमत विभिन्न स्थानों पर थोड़ी अलग हो सकती है और इसे ट्रैक्टर के इंजन पावर और फीचर्स के आधार पर निर्धारित किया गया है।

BHARAT CERTIS®
AGRISCIENCE LTD
A Group Company of Mitsui & Co., Ltd., Japan

हिमाराया

मिटाए खरपतवारों का साया
कपास के चौड़ी पत्ती खरपतवारों का उत्तम समाधान

सीमांत किसानों के लिए 37 से 50 एचपी श्रेणी में आने वाले पॉवर ट्रैक कंपनी के 5 ट्रैक्टर मॉडल्स

पॉवर ट्रैक कंपनी – किसानों के बीच ट्रैक्टरों में ये कंपनी बहुत प्रसिद्ध है। किसानों को इस कंपनी के ट्रैक्टर बहुत पसंद आते हैं। कंपनी निरंतर किसानों के लिए नवीनतम तकनीक से ट्रैक्टर बनाती रहती है। जिससे किसान को खेती करना आसान बन सकें। हमारे इस लेख में हम आपको पॉवरट्रैक कंपनी के सर्वश्रेष्ठ 37 से 50 एचपी श्रेणी में आने वाले ट्रैक्टरों के विशेषताओं, स्पेसिफिकेशन और मूल्य के बारे में पूरी जानकारी देंगे।

37 से 50 एचपी श्रेणी में आने वाले पॉवरट्रैक कंपनी के 5 ट्रैक्टर मॉडल्स

किसानों की सेवा के लिए पॉवरट्रैक ट्रैक्टर कंपनी निरंतर नए और उत्तम ट्रैक्टरों का निर्माण करती रहती हैं, पॉवरट्रैक कंपनी द्वारा निर्मित उत्तम ट्रैक्टरों की लिस्ट निम्नलिखित हैं:

1. पॉवर ट्रैक 434 डीएस सुपर सेवर

- पॉवर ट्रैक 434 डीएस सुपर सेवर ट्रैक्टर में आपको 37ीच का इंजन मिलता है।
- इंजन की क्यूबिक कैपेसिटी 2146 ब्ब है।
- ट्रैक्टर में कंपनी ने 3 सिलेंडर प्रदान किये है।
- ट्रैक्टर का इंजन 2200 रेटेड आरपीएम हमदमतंजम करता है।
- पॉवर ट्रैक 434 डीएस सुपर सेवर ट्रैक्टर की ट्रांसमिशन की बात करे तो इस ट्रैक्टर में कंपनी 8 फॉरवर्ड. 2 रिवर्स गिय. रबॉक्स प्रदान करती है।
- इस ट्रैक्टर के गियर बॉक्स शिफ्टिंग आपको सेण्टर में मिलती है।
- ब्रेक्स की बात करे तो कंपनी इस ट्रैक्टर में डनसजप च्संजम तेल में डूबे हुए क्पेब ब्रेक प्रदान करती है।
- इस ट्रैक्टर में डमबींदपबंस ैपदहसम कतवच ंतउ ऑप्शन के साथ स्टीयरिंग मिलता है।
- ट्रैक्टर की भार उठाने की क्षमता 1500 किलोग्राम है।
- पॉवर ट्रैक 434 डीएस सुपर सेवर ट्रैक्टर की कीमत की बात करे तो इस ट्रैक्टर की भारत में कीमत 6.10 लाख रूपए तक है।

2. पॉवर ट्रैक 434 प्लस पावरहाउस

- पॉवर ट्रैक 434 प्लस पावरहाउस ट्रैक्टर अब अधिक शक्तिशाली 39 एचपी श्रेणी इंजन और एवीएल प्रौद्योगिकी के साथ आता है, इंजन 2000 म्त्व्ड ळमदमतंजम करता है।
- ट्रैक्टर में ट्रांसमिशन थ्नससल ब्वदेजंदज डमी दिया गया है, गियर्स 8 थ्वतूंतक. 2 त्मअमतेम दिए
- गए है।
- ट्रैक्टर में ब्सनजबी टाइप की बात करे तो इस ट्रैक्टर में आपको ैपदहसम ब्सनजबीध्क्नंस ब्सनजबी दोनों ऑप्शन मिलते है।
- इस ट्रैक्टर में ब्रेक टाइप की बात करे तो डनसजप च्संजम तेल में डूबे हुए ब्रेक्स मिलते है।

- ट्रैक्टर की हाइड्रोलिक लिफ्टिंग कैपेसिटी 1600 किलोग्राम है।
- पॉवरट्रैक 434 प्लस पावरहाउस 1600 कि.ग्रा. के सर्वश्रेष्ठ सेन्सी 1 लिफ्ट के साथ आता है।
- इस हैवी ड्यूटी लिफ्ट से आपको न केवल समान खेती के लिए बेहतर संवेदनशीलता मिलती है बल्कि उत्प. ादकता भी बढ़ती है।
- ट्रैक्टर में टायर्स की बात करे तो आगे के टायरों 6.0 • 16 के और पीछे के टायर 13.6 • 28 के आते है।
- ट्रैक्टर की कीमत की बात करे तो इस ट्रैक्टर की कीमत ₹6.20–6.42 लाख रूपए तक है।

3. पॉवर ट्रैक यूरो 439

- इस ट्रैक्टर में 42 ीच का इंजन दिया गया है, जो की ।टस टेक्नोलॉजी के साथ डिजाइन किया गया है।
- इंजन 3 सिलेंडर के साथ आता है।
- ट्रैक्टर में कुल गियर 10 (8 फॉरवर्ड . 2 रिवर्स गियर बॉक्स) आते है।
- पॉवर ट्रैक यूरो 439 ट्रैक्टर के आगे के टायर 6.00 •16 और पीछे के टायर 13.6•28 के आते है।
- इस ट्रैक्टर के ईंधन टैंक की क्षमता 50 लीटर है।
- बड़ी ईंधन क्षमता होने के कारण आप इससे लंबे समय तक खेत में काम कर सकते है।
- ट्रैक्टर की हाइड्रोलिक वजन उठाने की क्षमता 1600 किलोग्राम है। ढुलाई के लिए भी ये ट्रैक्टर बहुत अच्छा है।
- इस ट्रैक्टर की कीमत की हम बात करें तो ये आपको 5,70,000 – 6,45,000 रूपए तक की बाजार कीमत में मिलता है।
- कंपनी ट्रैक्टर की 5000 घंटे की वार्रन्टी भी प्रदान करती है।

4. पॉवर ट्रैक यूरो 45 प्लस 4ॅक

- ट्रैक्टर में 4 सिलेंडरों के साथ शक्तिशाली 47 ीच इंजन है, जो 2000 आरपीएम उत्पन्न करता है।
- ट्रैक्टर का पीटीओ 34.7 भ्च पावर का दिया गया है।
- पीटीओ की गति 540 आरपीएम है और रिवर्स पीटीओ भी इस ट्रैक्टर में आपको मिलता है।
- यूरो 45 प्लस ट्रैक्टर 8. 8 सिंक्रो शटल गियरबॉक्स के साथ आता है जो ट्रैक्टर को आगे और पीछे आसानी से घुमाने में मदद करता है।
- पॉवर ट्रैक यूरो 45 प्लस 4ॅक ट्रैक्टर में स्टीयरिंग पावर स्टीयरिंग दिया गया है।
- पावर स्टीयरिंग होने से ट्रैक्टर के चालक को ट्रैक्टर को चलने में भी मजा आता है, यूरो 45 प्लस ट्रैक्टर सीलबंद 4 व्हील ड्राइव एक्सल के साथ आता है।
- ट्रैक्टर में फ्रंट टायर्स साइज 8.0•18६ 8.3ग्20६ 9.5ग्18 है और रियर टायर्स का साइज 13.6•28, 9.5ध्18 है।
- ट्रैक्टर की लिफ्टिंग कैपेसिटी 1600 किलोग्राम है।
- पॉवर ट्रैक यूरो 45 प्लस 4ॅक ट्रैक्टर की कीमत 8.25–8.67 लाख रूपए तक है।

5. पॉवर ट्रैक यूरो 50

- पॉवर ट्रैक यूरो 50 इस ट्रैक्टर में आपको 50 भ्च श्रेणी का इंजन मिलता है।
- इंजन 2200 त्च्ड जरनेट करता है।
- ट्रैक्टर के इंजन में 3 सिलेंडर मिलते है।
- यूरो 50 ट्रैक्टर 45.6 एचपी के पीटीओ पावर के साथ आता है।
- इस ट्रैक्टर में ळमंत बॉक्स के ट्रांसमिशन की बात करे तो इस ट्रैक्टर में आपको फुल्ली ब्वदेजंदज डमी टाइप ट्रांसमिशन दिया गया है।
- ब्रेक टाइप कि बात करे तो इस ट्रैक्टर में आपको तेल में डूबे हुए ब्रेक्स मिलते है।
- पॉवर ट्रैक यूरो 50 ट्रैक्टर में आपको बैलेंस्ड पावर स्टीयरिंग मिलता है।
- ट्रैक्टर में हाइड्रोलिक टाइप ज्वच स्पदा ̧मदेपदह ̈मदेप 1 हाइड्रोलि. क्स) के साथ आता है।
- पॉवर ट्रैक यूरो 50 – 2000 कि.ग्रा. के सर्वश्रेष्ठ लिफ्टिंग कैपेसिटी के साथ आता है।
- पॉवर ट्रैक यूरो 50 ट्रैक्टर एक 50 एचपी ट्रैक्टर है जो 7.40–7.75 लाख रुपये की कीमत पर उपलब्ध है।

मेरीखेती पर आपको हर प्रकार की जानकारी मिलती है। हम आपको हमेशा अपडेट रखते है जिससे की आपको पशुपालन, ट्रैक्टर, कृषि मशीने और अन्य खेती से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी मिलती रहती हैं।

भारत में सबसे ज्यादा बिकने वाले महिंद्रा कंपनी के टॉप 5 ट्रैक्टर मॉडल्स

किसान भाइयों जैसा की आप जानते है महिंद्रा कंपनी समय समय पर नए ट्रैक्टरों का निर्माण करती रहती है और कंपनी हर बार कंपनी एडवांस तकनीक के साथ ट्रैक्टरो का निर्माण करती है। महिंद्रा के ट्रैक्टर खेत में कम डीजल की खपत में काम करने के लिए जाने जाते है। कंपनी किसानों के बजट के हिसाब से ट्रैक्टर का निर्माण करती है जिससे की कम कीमत में सभी फीचर्स किसानों को एक ही ट्रैक्टर में मिल सके। इसलिए किसान सब से ज्यादा महिंद्रा के ट्रैक्टर खरीदना पसंद करते है। आज हम आपको महिंद्रा कंपनी के सबसे ज्यादा पसंद किए जाने वाले 5 ट्रैक्टरों के बारे में जानक. ारी देंगे।

महिंद्रा कंपनी के टॉप 5 ट्रैक्टर मॉडल

ये सभी ट्रैक्टर मॉडल हर प्रकार की नई तकनीकों से भरे हुए है। महिंद्रा के इन ट्रैक्टरों में नई उच्च–मध्यम–निम्न ट्रांसमिशन प्रणाली है जो सात अतिरिक्त अनूठी गति के साथ गियर, सहज ड्राइविंग अनुभव के लिए सिंक्रोमेश ट्रांसमिशन और सटीकता के लिए एक तेज–प्रतिक्रिया हाइड्रोलिक प्रणाली जैसी उन्नत तकनीकों का ढेर है।

इन सभी के फीचर्स, स्पेसिफिकेशन और कीमत से जुड़ा सम्पूर्ण विवरण निम्नलिखित है –

1.महिंद्रा अर्जुन नोवो 605 DI-i-4WD

- आज के दिन किसानों के बीच महिंद्रा अर्जुन नोवो 605 DI-i-4WD मॉडल बहुत लोकप्रिय बना हुआ है।
- इसलिए इस ट्रैक्टर को एक नंबर पर रखना गया है। ये ट्रैक्टर बहुत अच्छी इंजन क्षमता और फीचर्स के साथ में आता है।
- महिंद्रा अर्जुन नोवो 605 DI-i-4WD ट्रैक्टर में कंपनी ने 55 HP एचपी का शक्तिशाली इंजन दिया है, जो कि 4 सिलिंडर्स के साथ में आता है।
- इसके इंजन की क्यूबिक कैपेसिटी 3531 CC दी गयी है, जो कि 2100 Engine Rated RPM पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करता हैं।
- Partial Synchro Mesh ट्रांसमिशन के साथ में ये ट्रैक्टर आता हैं और इसके गियरबॉक्स में कंपनी ने 15 Forward + 15 Reverse गियर्स प्रदान कियए हैं जो की ट्रैक्टर को 1.71 & 33.5 kmph की Forward Speed और 1.63 & 32.0 kmph की Reverse Speed हैं प्रदान करते हैं।
- 2700 kg वजन उठाने की क्षमता इस ट्रैक्टर में आपको देखने को मिल जाती हैं।
- इन सभी फीचर्स के साथ में इस ट्रैक्टर की कीमत 10.68–11.45 लाख रूपए तक रखी गयी हैं।

2. महिंद्रा युवो 575 DI 4WD

- महिंद्रा युवो 575 DI 4WD ट्रैक्टर भी किसानों के बीच बहुत पसंद किया जाता हैं, इसलिए हमने इसको दूसरे नंबर पर रखा हैं। ये ट्रैक्टर 45 HP के इंजन के साथ में आता हैं।
- इसके इंजन में 4 सिलिंडर दिए गए हैं और ये 2000 आरपीएम पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करता हैं।
- इसकी पीटीओ पावर 41.1 hp दी गयी हैं।
- ट्रैक्टर में Full Constant mesh टाइप का ट्रांसमिशन दिया गया हैं, साथ ही इसमें आपको 12 Forward + 3 Reverse गियर्स मिलते हैं।
- ट्रैक्टर को नियंत्रित करने के लिए इस ट्रैक्टर में आपको Oil Immersed ब्रेक्स दिए गए हैं।
- महिंद्रा युवो 575 DI ट्रैक्टर की वजन उठाने की क्षमता 2085 किलोग्राम दी गयी हैं।
- इस ट्रैक्टर में फ्रंट टायर 8-00 x 18 और रियर टायर 13-6 x 28 के दिए गए हैं।
- महिंद्रा युवो 575 DI ट्रैक्टर की कीमत 8.99–9.35 लाख रूपए तक हैं।

3. महिंद्रा 585 DI XP PLUS ट्रैक्टर

- महिंद्रा 585 DI XP Plus ट्रैक्टर में कंपनी ने 49 hp का शक्तिशाली इंजन कंपनी ने प्रदान किया हैं जिससे की सभी कार्य आसानी से किए जा सकते हैं।
- ट्रैक्टर में इंजन की क्यूबिक कैपेसिटी 3054 CC दी गयी हैं।
- ट्रैक्टर में Full Constant mesh टाइप का ट्रांसमिशन दिया गया हैं, साथ ही इसमें आपको 8 Forward + 2 Reverse गियर्स मिलते हैं।
- ट्रैक्टर को नियंत्रित करने के लिए इस ट्रैक्टर में आपको Oil Immersed ब्रेक्स मिलते हैं।
- 50 लीटर का फ्यूल टैंक इस ट्रैक्टर में कंपनी ने प्रदान किया हैं।
- महिंद्रा 585 DI XP Plus ट्रैक्टर की वजन उठाने की क्षमता 1800 किलोग्राम दी गयी हैं।
- इस ट्रैक्टर में फ्रंट टायर 7-50 x 16 और रियर टायर 14-9 x 28 के दिए गए हैं।
- महिंद्रा 585 DI XP Plus ट्रैक्टर की कीमत 7.50–7.85 लाख रूपए तक हैं।

4. महिंद्रा 275 DI TU

- महिंद्रा 275 क्प ज्न ट्रैक्टर एक शानदार पावर वाला ट्रैक्टर हैं जो की शक्तिशाली इंजन के साथ में आता हैं इस ट्रैक्टर में कंपनी ने 39 ीच का शक्तिशाली इंजन प्रदान किया हैं, जो की इस ट्रैक्टर को सीमांत किसानों के लिए एक अच्छा विक्लप बनाता हैं।
- इस ट्रैक्टर के इंजन 3 सिलिंडर जो की 2100 आरपीएम पर उत्कृष्ट कार्य करता हैं।
- इस ट्रैक्टर के इंजन को ठंडा रखने के लिए कंपनी ने वाटर कूल्ड सिस्टम ट्रैक्टर में कंपनी ने प्रदान किया हैं।
- च्तजपंस ब्वदेजंदज उमेी टाइप का इसमें ट्रांसमिशन दिया गया हैं साथ ही गियरबॉक्स में 8 थ्वतूंतक 2 रिवर्स गियर्स दिए गए हैं।
- व्पस ब्रेक्स इस ट्रैक्टर में दिए गए हैं और पावर स्टीयरिंग आपको इस ट्रैक्टर में मिल जाता हैं।
- महिंद्रा 275 क्प ज्न ट्रैक्टर की वजन उठाने की क्षमता 1200 किलोग्राम की दी गयी हैं।
- इस ट्रैक्टर में फ्रंट टायर 6.00 ग 16 के दिए गए हैं और रियर टायर 12.4 ग 28 ६ 13.6 ग 28 के दिए गए हैं।
- ट्रैक्टर की कीमत 6.19 सी – 6.38 लाख रूपए तक हैं।

5. महिंद्रा 475 क्प डै ग्च च्स्ै

- महिंद्रा 475 क्प डै ग्च च्स्ै ट्रैक्टर एक 31.3 ॅ (42 भ्च) वाला शक्तिशाली ट्रैक्टर हैं, जिसके इंजन में आपको 4 सिलिंडर मिल जाते हैं।
- इसका इंजन 2000 आरपीएम पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करता हैं।
- च्तजपंस ब्वदेजंदज उमेी प्रकार का ट्रांसमिशन इस ट्रैक्टर में आपको मिल जाता हैं।
- इसके गियरबॉक्स में आपको 8 थ्वतूंतक 2 त्मअमतेम गियर्स आपको मिल जाते हैं।
- ट्रैक्टर की वजन उठाने की क्षमता 1480 किलोग्राम की दी गयी हैं, साथ ही इसमें 3 चवपदज लिंकेज वाला ।क्ब्ब सिस्टम मिल जाता हैं।
- इस ट्रैक्टर में फ्रंट टायर 6.00 ग 16 और रियर टायर 12.4 ग 28 ६ 13.6 ग 28 के मिल जाते हैं।
- ट्रैक्टर की कीमत 6.75 लाख से 7.10 लाख रूपए तक हैं।
- मेरीखेती पर आपको हर प्रकार की जानकारी मिलती है। हम आपको हमेशा अपडेट रखते है जिससे की आपको पशुपालन, ट्रैक्टर, कृषि मशीने और अन्य खेती से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी मिलती रहती हैं।

Coromandel
FUTURE POSITIVE

Ab sab Fit hai!

GROMOR FITSOL™

Complete nutrition with just 2 Fertigation grades

गाजर घास (कांग्रेस घास): फसलों, इंसानों और पशुओं पर प्रभाव और नियंत्रण के उपाय

खेती में सबसे अधिक नुकसान का कारण खरपतवार होते हैं। फसलों को कई प्रकार के खरपतवार प्रभावित करते हैं जिससे उपज में कमी आती हैं। ऐसा ही एक खरपतवार है गाजर घास (कांग्रेस घास) जिसकों कई नामों से जाना जाता है। कांग्रेस घास फसलों को तो नुकसान पहुँचाता है साथ ही ये खरपतवार इंसानो के लिए भी खतरनाक है, गाजर घास के कारण फसल की पैदावार में 40 प्रतिशत तक की कमी आती है। इस घास के कारण कई प्रकार की बीमार भी होती है। अगर इंसान इसके संपर्क में आता है तो डरमेटाइटिस, एक्जिमा, एलर्जी, बुखार, दमा आदि जैसी बीमारियां हो जाती हैं। इस लेख में हम आपको गाजर घास के बारे में सम्पूर्ण जानकारी मिलेगी।

गाजर घास (कांग्रेस घास) क्या होता हैं?

गाजर घास को अंग्रेजी में पार्थेनियम बोला जाता है जो की एक घातक खरपतवार (weed) होता है, जिसे आमतौर पर ष्गाजर घासष के नाम से भी जाना जाता है। यह एक बहुत ही हानिकारक पौधा है जो खेतों, बाग–बगीचों, और खाली जमीनों में तेजी से फैलता है। गाजर घास का वैज्ञानिक नाम Parthenium hysterophorus है। यह घास मूल रूप से अमेरिका से आई थी, लेकिन अब भारत सहित कई देशों में एक बड़ी समस्या बन चुकी है।

भारत में गाजर घास कहा से आया?

1950 के दशक में अमेरिका से गाजर घास (पार्थेनियम) भारत आया था। माना जाता है कि जब अमेरिका से गेहूं की खेप भेजी गई थी, तब यह घास भारत में आ गई थी। उस गेहूं के साथ गाजर घास (पार्थेनियम) के बीज भारत पहुंचे, जहां की जलवायु में यह घास तेजी से फैलने लगा। खासकर, यह घास रेलवे ट्रैक्स, सड़कों और खेतों में बहुत जल्दी फैल गया और एक झटके में पूरे देश में फैल गया। आज गाजर घास भारत के लगभग सभी राज्यों में पाई जाती है और इसे एक बहुत बड़ी समस्या माना जाता ह।

क्योंकि यह न केवल फसलों को नुकसान पहुंचाती है, बल्कि इंसानों और जानवरों के स्वास्थ्य पर भी बुरा असर डालती है।

गाजर घास दिखने में कैसा होता है? (Morphology of Parthenium hysterophorus)

गाजर घास या पार्थेनियम हिस्टेरोफोरस एक आक्रामक खरपतवार है। गाजर घास का तना सीधा और शाखित होता है, जो 0.5 से 1.5 मीटर तक ऊँचा हो सकता है साथ ही इसके तने का रंग हरे रंग का होता है, और इसमें महीन या छोटे रोएँ होते हैं। गाजर घास की पत्तियां गहरे हरे रंग की और गहराई से कटावदार होती हैं, पत्तियों की संरचना बारीक दांतेदार और रेशेदार होती है। इस पौधे में नलिका जड़ होती है जिसे अंग्रेजी में जंचतववज कहते हैं। Parthenium hysterophorus पर फूल छोटे और सफेद रंग के आते है। फूलों के समूह गोलाकार और छोटे आकार के होते हैं, जिनकी चौड़ाई लगभग 4–8 मि.मी. होती है। गर्मियों के मौसम में फूलों की वृद्धि अधिक होती है। गाजर घास फल छोटे और सूखे होते हैं, जिनमें एक छोटा सा बीज पाया जाता है। प्रत्येक पौधा लगभग 5,000 से 25,000 बीज पैदा कर सकता है, बीज छोटे और हल्के होते हैं, जो आसानी से हवा या पानी द्वारा फैल जाते हैं।

गाजर घास के फसलों, इंसानों और पशुओं पर होने वाले प्रभाव

गाजर घास एक आक्रामक खरपतवार है जो फसलों, मानव स्वास्थ्य और पशुधन पर गंभीर नकारात्मक प्रभाव डालती है। गाजर घास के फसलों, इंसानों और पशुओं पर होने वाले प्रभाव निम्नलिखित हैं:

फसलों पर प्रभाव

गाजर घास खेत में उग कर अन्य फसलों के साथ में पोषक तत्वों, पानी और सूर्य के प्रकाश के लिए प्रतिस्पर्धा करता है साथ ही यह पौधा जड़ और पत्तियों से जहरीले रसायन (एलेला. पैथिक पदार्थ) का उत्सर्जन करता है, जिससे की फसलों की वृद्धि प्रभावित होती है और फसलों का उत्पादन 40–90% तक कम हो सकता है।

इंसानों पर प्रभाव

गाजर घास के इंसानों पर भी कई बुरे प्रभाव देखने को मिलते है। इस के संपर्क में आने से त्वचा में जलन, खुजली, एलर्जी, और रैशेज (चकत्ते) हो सकते हैं। इसके पराग (पोलन) एलर्जी पैदा करते है जिस कारण से अस्थमा, श्वास कष्ट (ब्रोन्काइ. टिस), और अन्य श्वसन समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। पराग से आंखों में जलन, लालिमा, और सूजन (कंजक्टिवाइटिस) हो सकती है।

पशुओं पर प्रभाव

अगर कोई भी पशु इस घास को खा लेता है तो उस पर भी प्रभाव देखने को मिल सकते है, क्योंकि इसमें पोषक तत्वों की कमी होती है और यह जहरीली होती है। गाजर घास खाने से दूध की गुणवत्ता कम हो जाती है और दूध का स्वाद कड़वा हो सकता है, गाजर घास के सेवन से पशुओं में त्वचा की बीमा. रियाँ, श्वसन संबंधी समस्याएँ, और लीवर और किडनी पर नका. रात्मक प्रभाव हो सकते हैं।

गाजर घास या पार्थेनियम के नियंत्रण के उपाय

गाजर घास को खत्म करने के लिए आप निम्नलिखित उपाय अपना सकते है:

- सबसे पहले गाजर घास के प्रसार को रोकने के लिए जैविक, यांत्रिक और रासायनिक तरीकों का उपयोग किया जा सकता है।
- अगर खेत में गाजर घास का प्रभाव दिखाई देता है तो खेतों में समय पर निराई करके गाजर घास को फैलने से रोका जा सकता है।
- कुछ कीड़े जिनको इपवबवदजतवस ंहमदज के नाम से जाना जाता है जैसे कि ंलहवहतंउउं इपबवसवतंजं को गाजर घास के नियंत्रण के लिए इस्तेमाल किया जाता है, जो इसके पत्तियों को खाकर इसे नष्ट कर देते हैं।
- इसको खत्म करने के लिए एट्राजीन, अलाक्लोर, ड्यूरान, मेट्रिवुजिन, 2,4–डी और ग्लाइफोसेट आदि खरपतवा. रनाशकों का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। इन ीमतइप. बपकमे का इस्तेमाल इन पर लिखी जानकारी के अनुसार ही करें।

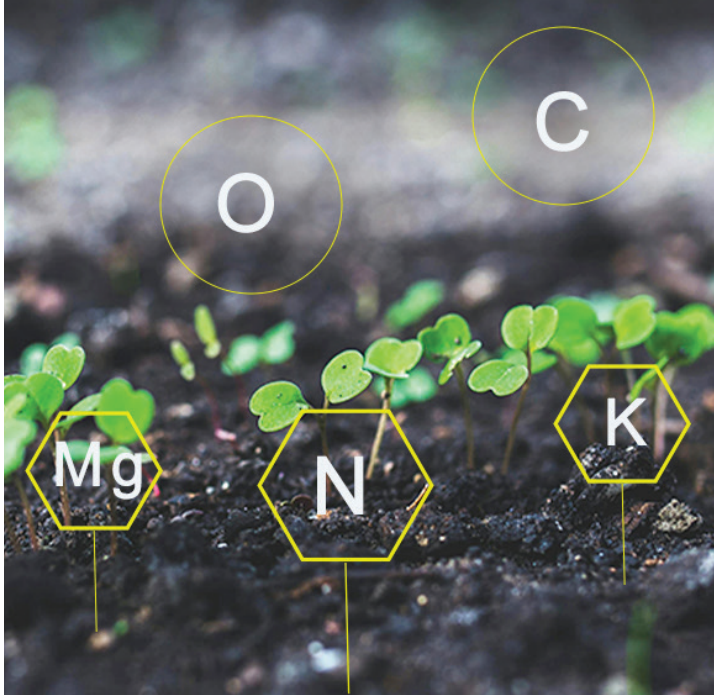

C:N अनुपात क्या है? अपघटन पर C:N अनुपात के प्रभाव

मेरे खेतों में धान की पराली का भूसा बनकर खेत में ही बिखर रहा है। लेकिन यह बात यहीं खत्म नहीं हो जाती है। इसमें एक सीमित मात्रा में यूरिया और क।च भी मिलाया जा चुका है। कार्बन–टू–नाइट्रोजन (C:N) अनुपात मिट्टी में दबे फसल अवशेषों के अपघटन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यहाँ बताया गया है कि कैसे:

C:N अनुपात क्या है?

C:N अनुपात कार्बनिक पदार्थों, जैसे कि फसल अवशेषों में कार्बन (C) से नाइट्रोजन (N) का सापेक्ष अनुपात है।

अपघटन में C:N अनुपात का महत्व:

- **सूक्ष्मजीवों की वृद्धि:** सूक्ष्मजीवों को कार्बनिक पदार्थों को विकसित करने और अपघटित करने के लिए संतुलित C:N अनुपात की आवश्यकता होती है।
- **नाइट्रोजन की उपलब्धता:** नाइट्रोजन सूक्ष्मजीवों की वृद्धि को सीमित करता हैय अतिरिक्त कार्बन नाइट्रोजन को स्थिर कर सकता है।
- **अपघटन दर:** इष्टतम C:N अनुपात अपघटन की गति को प्रभावित करता है।

अपघटन के लिए इष्टतम C:N अनुपात

- आम तौर पर 20:1 से 30:1 (C:N) के बीच
- आदर्श सीमारू 24:1 से 26:1

अपघटन पर C:N अनुपात के प्रभाव

कम ब्रूछ अनुपात (<20:1)

- तेजी से नाइट्रोजन रिलीज
- अमोनिया वाष्पीकरण
- नाइट्रोजन हानि का बढ़ा जोखिम

उच्च C:N अनुपात (>30:1)

- धीमी गति से अपघटन
- नाइट्रोजन स्थिरीकरण
- कम माइक्रोबियल गतिविधि

फसल अवशेष C:N अनुपात

- अनाज (गेहूं, चावल): 80–100:1
- फलियां (बीन्स, दाल): 10–20:1
- तिलहन (कैनोला, सूरजमुखी): 40–60:1

C:N अनुपात का प्रबंधन कुशल अपघटन

- अवशेषों को मिलानारू उच्च C:N अनुपात अवशेषों को कम C:N अनुपात अवशेषों के साथ मिलाना।
- नाइट्रोजन मिलानारू ब्रूछ अनुपात को संतुलित करने के लिए नाइट्रोजन से खाद डालना।
- कवर फसलों को शामिल करनारू फलीदार कवर फसलें C:N अनुपात को संतुलित कर सकती हैं।

C:N अनुपात और अपघटन को प्रभावित करने वाले कारक

- तापमान
- नमी
- pH
- वातन
- माइक्रोबियल समुदाय

C:N अनुपात को नजरअंदाज करने के परिणाम

- अपघटन दक्षता में कमी
- पोषक तत्वों का असंतुलन
- मृदा स्वास्थ्य में गिरावट
- पर्यावरण प्रदूषण

C:N अनुपात को समझकर और प्रबंधित करके, किसान और मृदा प्रबंधक अपघटन को अनुकूलित कर सकते हैं, मृदा उर्वरता में सुधार कर सकते हैं और संधारणीय मृदा स्वास्थ्य को बढ़ावा दे सकते हैं।

उत्कृष्ट दृष्टिकोण

यूरिया डालकर फसल अवशेषों के सीरूएन अनुपात को कम करना और डीएपी (डायमोनियम फॉस्फेट) का उपयोग करके सूक्ष्मजीव समुदाय को बढ़ाना प्रभावी रूप से अपघटन और पोषक चक्रण को बढ़ावा दे सकता है। यूरिया का प्रयोग:

- सूक्ष्मजीवों की वृद्धि के लिए नाइट्रोजन का स्रोत प्रदान करता है।
- सीरूएन अनुपात को कम करता है, अपघटन को सुगम बनाता है।
- अमोनिया उत्पादन को बढ़ाता है, सूक्ष्मजीवों की गतिविधि को उत्तेजित करता है।

डीएपी का प्रयोग

- सूक्ष्मजीवों की वृद्धि और गतिविधि के लिए फॉस्फोरस की आपूर्ति करता है।
- लाभकारी सूक्ष्मजीवों को उत्तेजित करता है, अपघटन को बढ़ावा देता है।
- पोषक तत्वों के चक्रण और उपलब्धता को बढ़ाता है।

यूरिया और डीएपी के संयोजन के लाभ

- सूक्ष्मजीवों की वृद्धि और अपघटन पर सहक्रियात्मक प्रभाव
- पोषक तत्वों की उपलब्धता और चक्रण में सुधार
- मिट्टी की उर्वरता और संरचना में वृद्धि
- फसल अवशेषों के विघटन और कार्बन पृथक्करण में वृद्धि

इष्टतम प्रयोग दर

- **यूरिया:** 50–100 कि.ग्रा./हेक्टेयर (फसल अवशेषों के प्रकार और सीरूएन अनुपात के आधार पर)
- **डीएपी:** 20–50 कि.ग्रा./हेक्टेयर (मिट्टी में फॉस्फोरस की स्थिति और सूक्ष्मजीव समुदाय के आधार पर)

आवेदन का समय

- कटाई के तुरंत बाद, अवशेषों के दौरान समावेशन
- रोपण से पहले, सूक्ष्मजीवी गतिविधि को प्रोत्साहित करने के लिए

निगरानी और समायोजन

- सीरूएन अनुपात, पोषक तत्व स्तर और सूक्ष्मजीवी गतिविधि के लिए नियमित मिट्टी परीक्षण
- मिट्टी की स्थिति और फसल अवशेष प्रकार के आधार पर आवेदन दरों को समायोजित करें

सूक्ष्मजीव समुदाय को बढ़ाने के लिए अतिरिक्त रणनी. तियाँ

- कवर फसलों और हरी खाद को शामिल करें
- जैविक संशोधन (खाद) का उपयोग करें
- इष्टतम मिट्टी पीएच, तापमान और नमी बनाए रखें
- जुताई को कम करें और संरक्षण कृषि को बढ़ावा दें

फार्मिंग के प्रकार: जीविका और वाणिज्यिक खेती के फायदे और विधियाँ

फार्मिंग का मतलब खेती करना होता है। यह कृषि का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसमें फसलों को उगाना और जानवरों का पालना शामिल है।

फार्मिंग का उद्देश्य भोजन और कच्चे माल का उत्पादन करना है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि फार्मिंग कितने प्रकार की होती है? इस लेख में आप इसके बारे में विस्तार से जानेंगे।

फार्मिंग के प्रकार

फार्मिंग के प्रकार को खेती करने की विधियों और उद्देश्य के हिसाब से बाटा गया हैं। फार्मिंग मुख्य रूप से दो प्रकार की होती है:

- जीविका (Subsistence) फार्मिंग
- वाणिज्यिक (Commercial) फार्मिंग

1. जीविका फार्मिंग (Subsistence Farming)

जीविका का मतलब है जीवन यापन के लिए। यह फार्मिंग किसान की परिवारिक जरूरतों को पूरा करने के लिए की जाती है। इसमें कम तकनीक और घरेलू श्रम का उपयोग किया जाता है, जिससे उत्पादन भी कम होता है। जीविका फार्मिंग के भी दो प्रकार होते हैं:

- गहन जीविका (Intensive Subsistence) फार्मिंग
- आदिम जीविका (Primitive Subsistence) फार्मिंग

गहन जीविका फार्मिंग (Intensive Subsistence)

इस प्रकार की फार्मिंग में किसान छोटे क्षेत्र में अधिक उत्पादन करता है। यह खेती परिवार की जरूरतों और जीवन यापन के लिए की जाती है। यह फार्मिंग उन क्षेत्रों में की जाती है जहां जन. संख्या घनत्व अधिक होता है। इसमें छोटे–छोटे भूखंड बनाकर खेती की जाती है, जिसे स्लैश एंड बर्न खेती भी कहा जाता है। इसमें धान (चावल) की फसल प्रमुख होती है।

आदिम जीविका फार्मिंग (Primitive Subsistence)

यह फार्मिंग भी परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए की जाती है। आदिम जीविका फार्मिंग के दो प्रकार होते हैं:

- शिफ्टिंग कल्टीवेशन (Shifting Cultivation)
- घुमंतू पशुपालन (Nomadic Herding)

a. शिफ्टिंग कल्टीवेशन (Shifting Cultivation)

इसे स्लैश एंड बर्न खेती भी कहा जाता है। इसमें जंगलों को काटकर जलाया जाता है, और जली हुई राख को खाद के रूप में इस्तेमाल करके जमीन पर खेती की जाती है। यह खेती वर्षा पर आधारित होती है, और इसमें मक्का, याम, आलू और नकदी फसलें उगाई जाती हैं।

b. घुमंतू पशुपालन (Nomadic Herding)

घुमंतू का मतलब होता है चरवाहे। यह फार्मिंग अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में की जाती है। इसमें चरवाहे भेड़, ऊंट, या गाय पालते हैं और अपने झुंडों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते हैं। यह फार्मिंग राजस्थान और गुजरात के क्षेत्रों में ज्यादा होती है।

2. वाणिज्यिक फार्मिंग (Commercial Farming)

वाणिज्यिक फार्मिंग बड़े क्षेत्र में की जाती है, और इसमें नई तकनीक का उपयोग होता है ताकि अधिक उत्पादन हो सके। इसमें मशीनरी और उच्च इनपुट्स का उपयोग किया जाता है, और इसका मुख्य उद्देश्य बाजार की आवश्यकताओं को पूरा करना और अधिक मुनाफा कमाना होता है।

वाणिज्यिक फार्मिंग के तीन प्रकार होते हैं:

- वाणिज्यिक अनाज फार्मिंग (Commercial Grain Farming)
- मिश्रित फार्मिंग (Mixed Farming)
- प्लांटेशन फार्मिंग (Plantation Farming)

वाणिज्यिक अनाज फार्मिंग (Commercial Grain Farming)

इसमें बड़े क्षेत्र में अनाज की खेती की जाती है। मुख्य फसलें गेहूं और मक्का होती हैं। यह फार्मिंग उत्तरी अमेरिका, यूरोप और एशिया के समशीतोष्ण घास के मैदानों में की जाती है। वहां के ठंडे मौसम के कारण साल में एक ही फसल उगाई जाती है।

मिश्रित फार्मिंग (Mixed Farming)

जब फसलों के उत्पादन के साथ पशुपालन भी किया जाता है, तो इसे मिश्रित फार्मिंग कहा जाता है। इसमें एक ही स्थान पर एक से अधिक फसलें उगाई जाती हैं।

प्लांटेशन फार्मिंग (Plantation Farming)

यह वाणिज्यिक फार्मिंग का एक प्रकार है, जिसमें एक बार पौधों का रोपण करके कई सालों तक उत्पादन लिया जाता है। इसमें एक ही प्रकार की फसल का बड़े पैमाने पर रोपण किया जाता है। इसमें चाय, कॉफी, गन्ना, काजू, रबर, केला और कपास जैसी फसलें उगाई जाती हैं, और इन्हें प्रसंस्करण के लिए बाजार में बेचा जाता है।

mahindra
TRACTORS
TOUGH HARDUM

माइलेज शानदार, पावर दमदार

Mahindra
275DI TU
XP PLUS
29.1 kW (39 HP)

जई की खेती कैसे की जाती हैं, जानिए बुवाई का समय

जई रबी मौसम की फसल है, इसकी खेती ठंडे क्षेत्रों में की जाती हैं। जई को मुख्य रूप से चारा फसल के रूप में उगाया जाता है, जई का उपयोग खाद्य पदार्थों में किया जाता है इसको कई स्थानों पर अनाज की फसल के रूप में भी उगाया जाता है। जई की खेती के लिए पर्याप्त सिंचाई की व्यवस्था होना बहुत आवश्यक है। इस लेख में हम आपको जई की खेती से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

जई की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु और मिट्टी की स्थिति

जैसा की आप जानते है ये एक रबी की फसल है तो इसकी खेती के लिए ठंडी जलवायु की आवश्यकता होती हैं। जई सर्दियों में 15–25 डिग्री सेल्सियस तापमान वाले ठंडे वातावरण में अच्छी तरह से अनुकूलित हो जाती है। नम स्थितियों के साथ जई ठंड–प्रतिरोधी हैं और यह पाले एवं अधिक ठंड को सहन कर सकती है। जई को जल जमाव वाली मिट्टी को छोड़कर सभी प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है। यह पर्याप्त जल निकासी वाली दोमट से चिकनी दोमट मिट्टी में अच्छी उपज देती हैं।

बुवाई के लिए भूमि की तैयारी

जई की बुवाई के लिए भूमि की अच्छे से जुताई कर लेनी चाहिए जिससे की बुवाई करनी आसान हो। खेत की तैयारी करने के लिए हर्रो या कल्टीवेटर से दो या तीन जुताईयां करनी चाहिए।

जई की उन्नत किस्में

अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए केंट, यूपीयू–212, वेस्टन II, एफएसओ–29, जेएचओ–851, ओएस–6, यूपीओ–94, ईसी–1185, आईजीएफआ. रआई–3021, रडार, अल्जीरियाई, ईसी–54807, आईसी–4263, फ्लेमिंग्स गोल्ड, एफसी–13594, वाहर जई–1, जई–2 और जई–03–91 आदि जैसी किस्मों की बुवाई करें।

जई का बीज और बुवाई का समय

देश के उत्तर–पश्चिम से पूर्वी क्षेत्र में जई की बुआई अक्टूबर के आरंभ से नवंबर के अंत तक शुरू कर देनी चाहिए। दिसम्बर से मार्च तक चारे की नियमित आपूर्ति हेतु, लेट बुवाई भी की जा सकती हैं। चारे के लिए 100 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती हैं। किंतु दाने के लिए केवल 80 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है।

जई की फसल में खाद और उर्वरक प्रबंधन

जिस खेत में जई की बुवाई करनी हैं उसमें 10 टन प्रति हेक्टेयर गोबर की खाद अंतिम जुताई के समय डालनी चाहिए। फसल में प्रति हेक्टेयर 80 किलोग्राम नाइट्रोजन, 40 किलोग्राम सल्फर व 20 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर देना चाहिए। नाइट्रोजन की एक तिहाई मात्रा तथा सल्फर एवं पोटाश की मात्रा बुवाई के समय देना चाहिए।

फसल में सिंचाई प्रबंधन

जई को बुआई पूर्व सिंचाई सहित 4–5 सिंचाईयों की आवश्यकता होती है। चारे के लिए बोई गई फसल में कई बार कटाई करने पर, प्रत्येक कटाई के बाद खेत की सिंचाई करनी चाहिए। सिंचाई 20–25 दिन के अंतराल पर दी जा सकती है।

जई की कटाई और उपज

एकल कट किस्म में कटाई 50% फूल अवस्था पर की जाती है। पहली कटाई 60 दिन पर करनी चाहिए, उसके बाद दूसरी कटाई 50% फूल आने की अवस्था पर करनी चाहिए। जबकि मल्टीकट किस्मों में पहली कटाई 60 दिन की अवस्था में की जाती है, उसके बाद दूसरी कटाई 45 दिन की अवस्था में की जाती है। पहली कटाई के कुछ दिन बाद और तीसरी कटाई 50% फूल आने की अवस्था पर करें। हरे चारे की उपज जई में 400–500 क्विंटल/हेक्टेयर लिया जा सकता है।

भारत में पाई जाने वाली बकरियों की प्रमुख नस्लें और उनके फायदे

बकरी को गरीब की गाय के नाम से भी जाना जाता हैं। बकरी पालन आज के दिन में बहुत प्रचलित हो गया हैं इसको पालन करने वाले अधिक मुनाफा कमाते हैं। आपकी जानकारी के लिए बता दे कि देश के ग्रामीण इला. कों में बकरी पालन का काम लगातार बढ़ता जा रहा है। गांव में बकरी पालन पिछले कई दशकों से चल रहा है, लेकिन आज बकरी पालन एक बेहतर व्यवसाय के रूप में तेजी से बढ़ रहा है। बकरी पालन से जुड़कर कई किसान आर्थिक रूप से मजबूत हो गए हैं और अपने जीवन–यापन को बदल रहे हैं। वहीं, बहुत से लोग बकरी पालन करके बेहतर कमाई कर रहे हैं। यही कारण है की आज के इस लेख में हम आपको बकरियों की नस्लें बातयेंगे, नस्लों से जुड़ी जानकारी प्राप्त करके आप आपने क्षेत्र के हिसाब से बकरी की नस्ल का चुनाव कर सकते हैं।

भारतीय बकरियों की नस्लें

देश में कई प्रकार की बकरियों की नस्लें देखने को मिलती हैं, देश भर में फैली हुई स्थानीय अनिर्दिष्ट बकरियों के अलावा लगभग 19 अच्छी तरह से परिभाषित भारतीय नस्लें हैं। इन सभी नस्लों को स्थान के आधार पर वर्गीकृत किया गया हैं बकरियों की नस्लों को स्थान या क्षेत्र के आधार पर वर्गीकृत (बाटा) गया हैं। इनमे शामिल हैं हिमालय – क्षेत्र (पहाड़ी क्षेत्र), उत्तरी क्षेत्र की नस्लें, मध्य क्षेत्र की नस्लें, दक्षिणी क्षेत्र की नस्लें और पूर्वी क्षेत्र की नस्लें इन सभी की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. पश्मीना बकरी

- इसका पालन पहाड़ी क्षेत्र में किया जाता हैं।
- इस नस्ल की बकरी दिखने में छोटी और सुंदर होती हैं जिनकी चाल बहुत तेज होती है।
- इन्हें हिमालय, लद्दाख और लाहौल और स्पीति घाटियों में 3400 मीटर से अधिक ऊंचाई पर पाला जाता है।
- पश्मीना बकरी सबसे मुलायम और गर्म पशु फाइबर का उत्पादन करने के लिए जानी जाती हैं जिसका उपयोग उच्च गुणवत्ता वाले कपड़ों के लिए किया जाता है।
- पश्मीना की उपज 75–150 ग्रामध्बकरी तक होती है।

2. जमुनापारी

- जमुनापारी नस्ल की बकरी उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में पाई जाती हैं।
- ये दिखने में बड़े आकार की, लंबे, बड़े मुड़े हुए लटकते कान वाली बकरी हैं।
- जमुनापारी के पिछले हिस्से पर लंबे और घने बाल होते हैं और ये चमकदार बकरी की तरह दिखते हैं।
- सींग छोटे और चपटे होते हैं।
- नर का वजन 65 से 86 किलोग्राम और मादा का वजन 45–61 किलोग्राम होता है।
- इस बकरी का दूध का उत्पादन 2.25 से 2.7 किलोग्राम प्रति दिन होता हैं।
- जमुनापारी नस्ल 250 दिनों की अवधि तक दूध उत्पादन कर सकती हैं और 3.5 प्रतिशत वसा इसके दूध में होता हैं।

3. बीटल

- ये एक बकरी की बहुत अच्छी नस्ल हैं।
- इन बकरियों का रंग लाल और भूरा होता है, कई बकरियों के ऊपर सफेद गहरे धब्बे होते हैं।
- नर का वजन 65–86 किलोग्राम होता है और मादा का वजन 45–61 किलोग्राम होता है।
- इस नस्ल की मादा बकरी प्रतिदिन लगभग 1 किलोग्राम दूध देता है, नर की दाढ़ी देखने को मिलती हैं।
- पहाड़ी क्षेत्र और उत्तरी क्षेत्र में इस नस्ल का पालन किया जा सकता हैं।

4. बारबरी

- बारबरी नस्ल की बकरिया उत्तर प्रदेश के इटावा, एटा, आगरा, मथुरा जिलों में और हरियाणा के करनाल, पानीपत और रोहतक जिलों में पाई जाती हैं।
- बारबरी नस्ल के रंग अलग–अलग होते हैं, जिनमें सफेद, लाल और भूरे रंग के धब्बे आम देखने को मिल जाते हैं, दिखने में इनके बाल छोटे होते हैं।
- वयस्क नर का वजन 36–45 किलोग्राम और मादा का वजन 27–36 किलोग्राम होता है।
- 108 दिनों की अवधि में प्रतिदिन 0.90 से 1.25 किलोग्राम दूध (वसा 5%) देते हैं।

5. बंगला नस्ल

- इस नस्ल की बकरियाँ तीन रंगों में आती हैंरू काला, भूरा और सफेद।
- इस नस्ल का मांस उत्तम है।
- नर बकरी का वजन 14–16 किलोग्राम होता है, जबकि मादा बकरी का वजन 9–14 किलोग्राम होता है।
- इस नस्ल में साल में दो बार बकरियाँ पैदा होती हैं और अक्सर जुड़वाँ बच्चे पैदा होते हैं।
- बंगला बकरियों की अच्छी गुणवत्ता की खाल की भारत और विदेशों में फुटवियर उद्योग में बड़ी माँग है।

6. काठियावाड़ी

- यह नस्ल कच्छ, उत्तरी गुजरात और राजस्थान की में पाई जाती है।
- इस नस्ल की बकरियों का रंग काला होता है और गर्दन पर लाल रंग के निशान होते हैं।
- मादा बकरी प्रतिदिन लगभग 1.25 किलोग्राम दूध देती है।
- इस बकरी का पालन मास और दूध दोनों के लिए किया जाता हैं।

7. बेरारी

- इस नस्ल की बकरी महाराष्ट्र के नागपुर और वर्धा जिले तथा मध्य प्रदेश के निनार जिले में पाई जाती है।
- ये लंबी और गहरे रंग की नस्लें हैं।
- मादा प्रतिदिन लगभग 0.6 किलोग्राम दूध देती है।
- ज्यादातर इस बकरी का पालन मॉस के लिए ही किया जाता हैं।

8. सुरती

- सुरती नस्ल की बकरिया महाराष्ट्र, गुजरात और राजस्थ के कुछ क्षेत्रों में पाई जाती हैं।
- सुरती बकरियाँ दिखने में बेरारी बकरियों से मिलती–जुलती हैं और इनके पैर सफेद और छोटे होते हैं।
- इसके अलावा सुरती बम्बई, नासिक और सूरत में लोकप्रिय है।
- सुरती नस्ल की बकरिया अच्छी दूध उत्पादक हैं और प्रतिदिन 2.25 किलोग्राम दूध देती हैं।

बकरियाँ हमेशा से गरीब लोगों को जीवित रखती आई हैं और उनका भरण–पोषण करती आई हैं, चाहे वह ठंडी और शुष्क पहाड़ियाँ हों, गर्म और शुष्क रेगिस्तान हो, पहाड़ों के पहाड़ी क्षेत्र या रिसने वाली मिट्टी से बनी खड्डें हों। बकरियों का वर्तमान वैश्विक वितरण बताता है कि दुधारू किस्म की बकरियाँ समशीतोष्ण क्षेत्रों में अधिक हैं, जबकि दोहरे किस्म या मांस किस्म की बकरियाँ अधिकतर उपोष्णकटिबंधीय और उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाई जाती हैं। बकरी कैप्रा वंश का सदस्य है और बोविडे (खोखले सींग वाले जुगाली करने वाले) परिवार से संबंधित है।

भारत की शीर्ष देशी गायों की नस्लें: विशेषताएं, दुग्ध उत्पादन, और लाभ

भारत एक कृषि प्रधान देश है, यहां किसान खेती के अलावा पशुपालन भी करते हैं। देश में कई दुधारू पशुओं पालन किए जाते हैं। गाय दुधारू पशुओं में सबसे महत्वपूर्ण है। भारत में कई प्रकार की गायों की नस्ले पाई जाती हैं। इसमें देशी और विलायती गाय शामिल हैं। विलायती गायों का दूध पानी की तरह पतला होता है, हालांकि वे अधिक दूध देती हैं। देशी गायों का दूध भारत में अमृत के समान माना जाता और देशी गाय के दूध में फैट भी अधिक होता हैं। देशी गायों का A2 गुणवत्ता वाला दूध मानव शरीर के लिए बहुत अच्छा है। इसलिए आजकल लोगों को देशी गाय का दूध अधिक पसंद है। यदि पशुपालकों को विदेशी गायों का पालन नहीं करना है, तो वे देशी गायों का पालन करना चाहिए। देशी गाय पालने से पहले पशुपालकों को गाय की नस्ल का पता होना बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए आज हम इस लेख में आपको भारत में पाई जाने वाली देशी नस्ल की गायों की सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

देशी गायों की प्रमुख विशेषताएँ

भारत में कई नस्लों की देशी गाय पाई जाती हैं। हर क्षेत्र के हिसाब से गायों की नस्लें अलग हैं, जो की निम्नलिखित दी गई हैं।

1.साहीवाल नस्ल की गाय

साहीवाल भारत की सबसे ज्यादा दूध देने वाली देशी गाय की नस्ल हैं। यह गाय पाकिस्तान के मोंट्गोमेरी पंजाब में पैदा हुई है। इस नस्ल की गाय डेयरी के लिए अच्छी है। यह नस्ल पंजाब के फिरोजपुर, अमृतसर और राजस्थान के श्री गंगानगर में पैदा हुई है। फिरोजपुर जिले के फाजिल्का और अबोहर शहरों के आसपास पंजाब में शुद्ध साहीवाल मवेशियों की बहुतायत है। हरियाणा में राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल ने साहीवाल गायों का एक बड़ा झुंड संभाला है।

साहीवाल नस्ल की प्रमुख विशेषताएँ:

- साहीवाल गायों का रंग भूरा लाल होता है, जो महोगनी लाल से अधिक भूरा होता है।
- सांडों का रंग शरीर के बाकी हिस्सों से गहरा होता है।
- इस नस्ल में सफेद दाग भी होते हैं।
- साहीवाल गायों के थन अच्छी तरह विकसित होते हैं।
- साहीवाल गायों की औसत दुग्ध उत्पादन क्षमता 10 से 20 kg है।
- संगठित कृषि परिस्थितियों में इस नस्ल की गायों ने औसत 12 से 15 लीटर प्रति दिन दूध उत्पादित किया है।

2. गिर नस्ल की गाय

गिर गाय एक विश्व प्रसिद्ध नस्ल है जो तनाव की स्थितियों में भी सहनशील होती है। यह नस्ल विभिन्न रोगों के प्रति प्रतिरोधी है। अपने विशेष गुणों के कारण गिर गायों को ब्राजील, अमेरिका, वेनेजुएला और मैक्सिको जैसे देशों में भी आयात किया गया है।

गिर नस्ल की प्रमुख विशेषताएँ:

- **रंग:** लाल या सफेद धब्बेदार लाल।
- **सींग:** घुमावदार और आधा चाँद के आकार के।
- **कान:** लंबे और पेंडुलस, पत्ते की तरह मुड़े हुए।
- **दुग्ध उत्पादन:** प्रति दिन 15–20 किलोग्राम, वसा प्रतिशत 4.6%।

3. लाल सिंधी नस्ल की गाय

लाल सिंधी नस्ल पाकिस्तान के सिंध प्रांत से उत्पन्न हुई है। इसे "मलिर", "लाल कराची" और "सिंधी" के नाम से भी जाना जाता है। यह नस्ल बेलूचिस्तान के लास बेला मवेशियों से विकसित हुई है।

लाल सिंधी गाय की प्रमुख विशेषताएँ:

- **रंग:** गहरे लाल से हल्के पीले लाल तक।
- गले और माथे पर छोटे सफेद धब्बे।
- **सींग:** मोटे और पार्श्व में निकलते हुए।
- **दुग्ध उत्पादन:** प्रति दुग्धकाल 1100–2600 किग्रा, प्रतिदिन 10–15 लीटर दूध, वसा प्रतिशत 4.5%।

4. हरियाणा नस्ल की गाय

हरियाणा नस्ल गंगा के मैदान की प्रमुख दोहरे उद्देश्य वाली गाय है। इस नस्ल का नाम हरियाणा राज्य के प्रजनन क्षेत्र के अनुसार रखा गया है। पहले इसे श्हिसारश और श्हांसीश के नाम से जाना जाता था।

हरियाणा नस्ल की गाय की प्रमुख विशेषताएँ:

- **रंग:** सफेद या हल्के भूरे।
- **चेहरा:** लंबे और संकीर्ण, सींग छोटे।
- **दुग्ध उत्पादन:** प्रतिदिन 10–15 किलोग्राम, वसा अच्छी गुणवत्ता की।
- **उपयोग:** बैल उत्पादन और कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त।

5. कांकरेज नस्ल की गाय

कांकरेज नस्ल गुजरात के बनासकांठा जिले के कांकरेज तालुका से उत्पन्न हुई है। यह नस्ल गुजरात के मेहसाणा, कच्छ, अहमदा. बाद, खेड़ा, आनंद, साबरकांठा जिलों और राजस्थान के बाड़मेर और जोधपुर जिलों में पाई जाती है। ब्राजील में इसे शुद्ध नस्ल के रूप में रखा जा रहा है।

कांकरेज नस्ल की गाय की प्रमुख विशेषताएँरू

- **रंग:** सिल्वर ग्रे से आयरन ग्रे और स्टील ब्लैक।
- **सींग:** वीणा के आकार के, बड़े और मोटे।
- **दुग्ध उत्पादन:** प्रतिदिन 10–15 लीटर, कुछ गायें 18–20 लीटर तक दे सकती हैं।
- **प्रतिरोधक क्षमता:** टिक बुखार, गर्मी तनाव, संक्रामक गर्भपात और तपेदिक के प्रति प्रतिरोधी।

6. हाल्लीकर नस्ल की गाय

हाल्लीकर नस्ल जिसे ष्मैसूरष् के नाम से भी जाना जाता है, दक्षिणी भारत की प्रमुख नस्ल है। यह नस्ल कर्नाटक के मैसूर, मांड्या, बैंगलोर, कोलार, तुमकुर, हासन और चित्रदुर्ग जिलों में प्रजननित होती है।

हाल्लीकर नस्ल की गाय की प्रमुख विशेषताएँरू

- **रंग:** सफेद से हल्के भूरे।
- **सींग:** पोल के ऊपर से निकलते हुए, सीधे और थोड़ा उन्मुख।
- **दुग्ध उत्पादन:** प्रतिदिन 5–8 किलोग्राम, वसा प्रतिशत औसत 5.7ः।
- **रखरखाव:** अर्ध–गहन प्रबंधन प्रणाली में रखा जाता है, हरे चारे जैसे रागी, घास, ज्वार या बाजरा शामिल होते हैं।

भारत में पाई जाने वाली इन प्रमुख देशी गायों की नस्लें दुग्ध उत्पादन में अच्छी हैं और उनका दूध बहुत स्वास्थ्यवर्धक है। देशी गायों का पालन करके किसान न केवल अधिक धन कमा सकते हैं, बल्कि दूध से अपने स्वास्थ्य को बेहतर बना सकते हैं। भारतीय कृषि और पशुपालन को मजबूत बनाने के लिए देशी गायों का संरक्षण और विकास अनिवार्य है।

गुड़मार की खेती कैसे करें: उपज, उत्पादन और औषधीय लाभ

गुड़मार, एक महत्वपूर्ण औषधीय पौधा है, जिसे षजिमनिमा सिल्वेस्ट्रेष के रूप में भी जाना जाता है। इसके जड़ और पत्ते औषधीय गुणों से भरपूर होते हैं और विशेषकर इसका उपयोग मधुमेह जैसे रोगों के उपचार में किया जाता है। गुड़मार एक बहुवर्षीय बेल है, जिसकी शाखाओं पर हल्के रोयें होते हैं।अगस्त और सितंबर में इसके छोटे–छोटे पीले फूल गुच्छों में खिलते हैं। इसके फल कठोर होते हैं और बीजों में रूई लगी होती है, जो परिपक्व होने पर उड़ सकते हैं।

गुड़मार की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु और मिट्टी

गुड़मार की खेती के लिए गर्म और नम जलवायु उपयुक्त होती है। इसका उत्पादन मुख्य रूप से मध्य भारत, पश्चिमी घाट, कोकण और त्रिवणकोर के वनों में होता है। इसके लिए दोमट मिट्टी सबसे अच्छी मानी जाती है। अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी में इसके पौधे बेहतर तरीके से बढ़ते हैं। खेत की तैयारी के लिए मिट्टी को तीन बार जुताई कर भुरभुरी और समतल बना लेना चाहिए।

बीजों से रोपण

गुड़मार के पौधों की खेती बीजों के माध्यम से की जाती है। बीजों को रोपने से पहले फफूँदनाशक जैसे डायथेन एम–45 या बोवेस्टीन से उपचारित किया जाता है। बीजों को पॉलीथीन बैग में भरकर अप्रैल से मई तक बोया जाता है, और जुलाई–अगस्त में खेत में रोपण किया जा सकता है।

कलम से रोपण

पुराने पौधों की कलम से भी गुड़मार की खेती की जा सकती है। इसके लिए जनवरी–फरवरी का समय आदर्श माना जाता है। कलमों को पहले पॉलिथीन बैग में तैयार कर लिया जाता है और जुलाई–अगस्त में खेत में लगाया जा सकता है। यह पौधा 20–30 वर्षों तक उपज देता है।

पौधों का रोपण

गुड़मार के पौधों को 1•1 मीटर की दूरी पर गड्ढों में रोपा जा सकता है। प्रत्येक गड्ढे में 5 किलोग्राम गोबर की खाद और 50 ग्राम नीम की खली डालनी चाहिए। प्रति हेक्टेयर लगभग 10,000 पौधे लगाए जाते हैं।

आरोहण व्यवस्था

चूंकि गुड़मार एक लता है, इसे सहारा देने के लिए बांस, लोहे के एंगल और तारों का उपयोग किया जाता है। इससे बेलों को सहारा मिलता है और पौधों की वृद्धि बेहतर होती है।

सिंचाई

गर्मियों में पौधों को 10–15 दिनों के अंतराल पर और सर्दियों में 20–25 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए। इससे पौधों की वृद्धि में मदद मिलती है और सूखे का असर कम होता है।

फसल सुरक्षा

अधिक बारिश के कारण पौधों में पीलापन आ सकता है, जिसे रोकने के लिए रोपण के समय 10 किलोग्राम फेरस सल्फेट का उपयोग करना चाहिए।

फसल की तुड़ाई

गुड़मार की पत्तियाँ औषधीय उपयोग के लिए मुख्य रूप से एकत्र की जाती हैं। पहले वर्ष से ही पत्तियाँ प्राप्त होने लगती हैं और समय के साथ बेलें बढ़ती रहती हैं। सिंचित अवस्था में पत्तियों की तुड़ाई साल में दो बार की जाती हैरू पहली बार सितंबर–अक्टूबर में और दूसरी अप्रैल–मई में। परिपक्व पत्तियों को तोड़कर छायादार स्थान पर सुखाना चाहिए। ग्रीष्म ऋतु में बीजों वाली फल्लियाँ एकत्र की जाती हैं, पर ध्यान रहे कि फल्लियाँ चटक न जाएँ, जिससे बीज सुरक्षित रहें।

MERIKHETI

किसानो की बात
मेरी खेती के साथ

www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501
Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali,
Sector -1, Ghaziabad - 201010